

Manuscript

विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्द

विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 2

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[परिचय 1](#_Toc80705861)

[दिशा-निर्धारण 1](#_Toc80705862)

[परिभाषा 1](#_Toc80705863)

[शब्द और अवधारणाएँ 2](#_Toc80705864)

[सामान्य प्रयोग में भाषा 2](#_Toc80705865)

[पवित्रशास्त्र की भाषा 3](#_Toc80705866)

[आवश्यकता 6](#_Toc80705867)

[अनेक शब्द – एक अवधारणा 7](#_Toc80705868)

[एक शब्द – अनेक विचारधाराएँ 8](#_Toc80705869)

[स्थान 9](#_Toc80705870)

[निर्माण 10](#_Toc80705871)

[बाइबल आधारित शब्द 10](#_Toc80705872)

[एक शब्द पर बल देना 11](#_Toc80705873)

[एक अर्थ पर बल देना 11](#_Toc80705874)

[नए अर्थों की रचना करना 12](#_Toc80705875)

[बाइबल से बाहर की भाषा 13](#_Toc80705876)

[सामान्य शब्दावली 13](#_Toc80705877)

[दर्शनशास्त्रीय शब्दावली 14](#_Toc80705878)

[संयोजित शब्दावली 15](#_Toc80705879)

[मूल्य और खतरे 16](#_Toc80705880)

[मसीही जीवन 17](#_Toc80705881)

[वृद्धि 17](#_Toc80705882)

[रूकावट 18](#_Toc80705883)

[समुदाय में सहभागिता 19](#_Toc80705884)

[वृद्धि 20](#_Toc80705885)

[रूकावट 20](#_Toc80705886)

[पवित्रशास्त्र की व्याख्या 21](#_Toc80705887)

[वृद्धि 22](#_Toc80705888)

[रूकावट 23](#_Toc80705889)

[उपसंहार 24](#_Toc80705890)

परिचय

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि लगभग प्रत्येक व्यवसाय के लोग, हर प्रकार की नौकरियों में काम करने वाले मजदूर, एक दूसरे से बात करने के अपने ही तरीकों को ढूँढ लेते हैंॽ वे ऐसे शब्द और वाक्य बना लेते हैं जो उनके लिए विशेष अर्थ रखते हैं, फिर चाहे दूसरे उन्हें समझ भी न पाएँ कि उनका अर्थ क्या है। चिकित्सक, वकील, कार मकैनिक, किसान, मिस्त्री – चाहे कोई भी काम करने वाले हों; हम कई बार एक दूसरे से बात करने के विशेष तरीके, यहाँ तक कि तकनीकी तरीके भी ढूंढ लेते हैं।

001

कई रूपों में, विधिवत धर्मविज्ञान में भी ऐसा ही होता है। विधिवत धर्मविज्ञानी अपने धर्मविज्ञान की रचना विशेष प्रकार की शब्दावलियों से करते हैं। वे तकनीकी शब्दों के द्वारा एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के अपने तरीके बना लेते हैं।

002

यह विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करने की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें हम यह खोज रहे हैं कि प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञानी विधिवत धर्मविज्ञान की रचना कैसे करते हैं। हमने इस अध्याय का शीर्षक “विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्द” दिया है, और इस अध्याय में हम कुछ ऐसे तरीकों को देखेंगे जिनमें विशेष शब्द और वाक्य विधिवत धर्मविज्ञानियों को अपना कार्य पूरा करने में योग्य बनाते हैं।

003

हमारा अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों की ओर सामान्य दिशा-निर्धारण को देखेंगे, अर्थात् वे क्या हैं और विधिवत प्रक्रियाओं में उनका क्या स्थान है। दूसरा, हम तकनीकी शब्दों की रचना या बनाए जाने की खोज करेंगे, अर्थात् कैसे विधिवत धर्मविज्ञानियों ने बातों के कहने के अपने विशेष तरीकों को ढूँढा है। और तीसरा, हम विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दों के मूल्य और खतरों की खोज करेंगे, अर्थात् उन तरीकों की जो विधिवत धर्मविज्ञान की रचना करने के हमारे प्रयासों को बढ़ाते या रोकते हैं। आइए, तकनीकी शब्दों के मूल दिशा-निर्धारण से आरंभ करें।

004

दिशा-निर्धारण

इस विषय के व्यापक दृष्टिकोण के लिए, हम चार विषयों को देखेंगे। पहला, हम यह परिभाषित करेंगे कि तकनीकी शब्दों से हमारा क्या तात्पर्य है। दूसरा, हम तकनीकी शब्दों और धर्मवैज्ञानिक अवधारणाओं के बीच के संबंध को स्पष्ट करेंगे। तीसरा, हम विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दावलियों के प्रयोग की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और चौथा, हम विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में तकनीकी शब्दों के स्थान का वर्णन करेंगे।

005

005

परिभाषा

जब हम पहले-पहल विधिवत धर्मविज्ञान का अध्ययन करना आरंभ करते हैं, तो जल्द ही यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें विधिवत धर्मविज्ञानियों की भाषा सीखना आवश्यक है। विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर ऐसे शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग करते हैं जिनका हम सामान्यतः प्रयोग नहीं करते। और यहाँ तक कि जब वे रोजमर्रा के जीवन के शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो भी वे उनका प्रयोग अक्सर असामान्य रूपों में करते हैं। बातों को कहने के इन विशेष तरीकों को ही अक्सर “धर्मविज्ञान-संबंधी तकनीकी शब्द” कहा जाता है। हमारे उद्देश्यों के लिए, हम धर्मविज्ञान-संबंधी तकनीकी शब्दों की परिभाषा “धर्मविज्ञान में विशेष अर्थ रखने वाले शब्दों और वाक्यांशों” के रूप में दे सकते हैं।

006

कई बार, विधिवत धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्दों को प्रयोग किसी एक बात का दूसरी बात से अंतर स्पष्ट करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, वाक्यांश “परमेश्वर-विज्ञान” (THEOLOGY PROPER) परमेश्वर या उसके बारे में अध्ययन को दर्शाता है। यह परमेश्वर के स्व-अस्तित्व, उसकी सर्वश्रेष्ठता आदि पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके विपरीत, शब्द “धर्मविज्ञान” अपने आप में परमेश्वर के विषय में किसी भी अध्ययन की सामान्य श्रेणी को दर्शाता है, जैसे कि मनुष्यजाति, पाप और उद्धार की धर्मशिक्षा।

007

कई बार तकनीकी शब्द जटिल विषयों को एक शब्द या वाक्यांश में संक्षिप्त करने के सुविधाजनक तरीकों को भी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, तकनीकी शब्द “त्रिएकता” केवल एक शब्द होते हुए भी बड़ी सुविधा के साथ परमेश्वरत्व की विस्तृत शिक्षाओं का सार प्रस्तुत कर देता है। धर्मवैज्ञानिक विचार-विमर्श में “त्रिएकता” का उल्लेख करना इसकी अपेक्षा कहीं सरल है कि हर बार इस धर्मशिक्षा के विवरणों को स्पष्ट किया जाए। जैसा भी हो, धर्मविज्ञान-संबंधी तकनीकी शब्द ऐसे शब्द और वाक्यांश हैं जिनका धर्मविज्ञान में विशेष अर्थ होता है।

008

अब जबकि हमारे पास यह आधारभूत जानकारी है कि तकनीकी शब्द वास्तव में क्या हैं, इसलिए हमें अब एक अन्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध। जिन शब्दों का हम प्रयोग करते हैं और जिन विचारों या अवधारणाओं को ये शब्द व्यक्त करते हैं, उनके बीच क्या संबंध हैं? ये कैसे एक दूसरे से कैसे मेल खाते हैंॽ

009

शब्द और अवधारणाएँ

हम इस विषय को दो कोणों से देखेंगे : पहला, भाषा में सामान्य रूप से शब्दों और अवधारणाओं के बीच आपसी संबंध; और दूसरा, पवित्रशास्त्र की भाषा में शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध। आइए पहले हम उन तरीकों को देखें जिनमें सामान्य रूप से शब्द और अवधारणाएँ एक दूसरे से संबंध रखते हैं।

010

010

सामान्य प्रयोग में भाषा

यदि आप अधिकांश लोगों से पूछें कि कैसे शब्द उन अवधारणाओं से संबंध रखते हैं जो उनके मन में है, तो शायद वे ऐसा कहें कि प्रत्येक शब्द जिसका वे प्रयोग करते हैं, उसका एक संबंधित विचार होता है। अधिकांश लोग ऐसा सोचते हैं कि शब्दों और अवधारणाओं के बीच एक बिल्कुल सीधा संबंध होता है।

011

यह देखना कठिन नहीं है कि लोग ऐसे क्यों सोचते हैं। जब हम छोटे बच्चों को अपने माता-पिता की भाषा सीखता हुआ देखते हैं, तो वे अक्सर लोगों, वस्तुओं और छोटे-मोटे कार्यों के नामों से सीखना आरंभ करते हैं। एक माता अपनी ओर संकेत करते हुए “मम्मी” कहती है, या फिर रोटी का एक टुकड़ा अपने हाथों में लेकर कहेगी, “रोटी”। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, बच्चे ज्यादा से ज्यादा शब्द सीखते जाते हैं, और वे इन शब्दों को ज्यादा से ज्यादा विचारों से जोड़ते हैं। द्वितीय भाषा को सीखने वाले व्यस्क लोग अक्सर ऐसी ही प्रक्रिया से आरंभ करते हैं जब वे शब्द-शब्द करके एक नई भाषा सीखते हैं। इन प्राथमिक स्तरों पर, यह सत्य है कि हम अक्सर एक शब्द को एक अवधारणा के साथ जोड़ते हैं।

012

परंतु जब हम इसके बारे में सोचना बन्द कर देते हैं, तो शब्दों और विचारों के बीच का संबंध बहुत जटिल होता है। हम इन कुछ जटिलताओं का सार दो सरल कथनों में प्रस्तुत कर सकते हैं। एक ओर, बहुत से शब्द एक अवधारणा को दिखा सकते हैं। और दूसरी ओर, एक शब्द कई अवधारणाओं को दिखा सकता है। आइए इस विषय के दोनों पहलुओं को देखें, हम इस तथ्य के साथ आरंभ करेंगे कि बहुत से शब्द एक अवधारणा को दर्शा सकते हैं।

013

यह देखना वास्तव में कठिन नहीं है कि हम अक्सर कई शब्दों का प्रयोग एक विचार को व्यक्त करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, मेरी एक बेटी है जिस का नाम बैकी है। और किसी के साथ वार्तालाप करते हुए, मैं उसका उल्लेख “बैकी,” “मेरी बेटी,” “वॉरेन की पत्नी,” “मैगी की माँ,” “लिली की माँ,” “मेरी बच्ची,” “मेरी इकलौती बच्ची” के रूप में कर सकता हूँ। इस सूची में और भी उल्लेख जोड़े जा सकते हैं। प्रत्येक विषय में, शब्दों के थोड़े से भिन्न अर्थ हैं परंतु वे सब मेरे जीवन में एक विशेष व्यक्ति की वही जटिल अवधारणा को दर्शाते हैं।

014

सामान्य भाषा में इस तरह की बातें बार-बार होती हैं। उन सारे तरीकों के बारे में सोचें जिनमें आप समुद्र का उल्लेख कर सकते हैं। उन शब्दों पर ध्यान दें जिनका प्रयोग आप किसी देश को दिखाने के लिए कर सकते हैं। संसार की प्रत्येक भाषा में अक्सर ऐसा ही होता है कि अनेक शब्द समान अवधारणा को व्यक्त करते हैं।

015

दूसरी ओर, यह भी सच है कि एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है। इसे देखने के लिए, केवल अपनी भाषा के शब्दकोश को ही देख लीजिए। शब्दकोश में बहुत सी प्रविष्टियाँ दर्शाती हैं कि एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। और ये अनेक परिभाषाएँ दर्शाती हैं कि एक शब्द कई भिन्न अवधारणाओं को दर्शाता है।

016

आइए हम रोजमर्रा की बातचीत से एक उदाहरण लें। अंग्रेजी के एक शब्द “बार” पर ध्यान दें। इस एक शब्द के कई भिन्न अर्थ हो सकते हैं। यह एक खम्बा, एक चट्टान, एक निषेध, वकीलों की एक पेशेवर संस्था, भोजन या पेय पदार्थ रखने वाला एक काउंटर और बहुत सी अन्य वस्तुएं हो सकता है। इसे कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है, इस बात पर आधारित होकर यह और अन्य शब्द कई भिन्न अवधारणाओं को व्यक्त कर सकते हैं।

017

अतः, भाषा के सामान्य प्रयोग में शब्दों और अवधारणाओं के बीच सदैव एक जैसा संबंध नहीं होता है। इसकी अपेक्षा, कई शब्द एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं, और एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है।

018

अब क्योंकि हमने भाषा के सामान्य प्रयोग में शब्दों और अवधारणाओं के आपसी संबंध के जटिल तरीकों को देख लिया है, इसलिए हमें उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिनमें वे पवित्रशास्त्र की भाषा में संबंध रखते हैं। जब हम बाइबल के साथ व्यवहार करते हैं तो शब्द और अवधारणाएँ कैसे एक दूसरे से संबंध रखते हैं? क्या परिस्थिति भिन्न हैॽ या क्या वह एक जैसी ही है?

019

पवित्रशास्त्र की भाषा

वास्तविकता तो यह है कि अधिकांश बाइबल साधारण भाषा में लिखी गई है। अतः, जैसे अनेक शब्द सामान्य भाषा में एक समान अवधारणा को दर्शा सकते हैं, वैसे ही अनेक शब्द बाइबल आधारित भाषा में भी एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं। और जिस प्रकार साधारण भाषा में एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है, उसी प्रकार एक शब्द बाइबल में भी कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है। आइए पहले इस वास्तविकता की ओर मुड़ें कि पवित्रशास्त्र में कई शब्द एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं।

020

भाषा के इस प्रयोग को देखने का एक सरल तरीका मसीही जीवन की अवधारणा को दर्शाने वाले बाइबल आधारित सभी शब्दों को देखना है। एक पल के लिए उन अनेक तरीकों पर ध्यान दें जिनमें केवल एक लेखक प्रेरित पौलुस ने मसीही जीवन का उल्लेख किया है। 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 में उसने इसे “पवित्रीकरण” कह कर पुकारा है। 1 कुरिन्थियों 4:17 में उसने इसे “विश्वासयोग्यता” के रूप में कहा है। रोमियों 16:19 में उसने मसीही जीवन को “आज्ञाकारिता” के रूप में भी उल्लिखित किया है। गलातियों 5:25 में उसने इसे “आत्मा में चलना” के वाक्यांश के रूप में दर्शाया है। और रोमियों 8:29 में उसने इसका वर्णन “पुत्र के स्वरूप” और 2 कुरिन्थियों 3:18 में “परिवर्तन” के रूप में किया है। इन सारे उदाहरणों में, पौलुस मूलत: एक ही विषय में बात कर रहा था : इसे हम “मसीही जीवन” कह सकते हैं।

021

पवित्रशास्त्र में और भी कई ऐसी अवधारणाएँ हैं जिनका विविध तरीकों से उल्लेख किया जाता है। उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र में यीशु के सारे नामों के बारे में सोचें। केवल “यीशु” या “नासरी यीशु” के नामों के साथ बुलाए जाने के साथ-साथ उसे सामान्य रूप से मसीह या यूनानी में ख्रिस्टोस कह कर पुकारा जाता है, जो कि इब्रानी शब्द मशीआख़ का यूनानी अनुवाद है, अर्थात् “अभिषिक्त जन।” उसे सामान्यतः प्रेरितों के काम 1:21 में “प्रभु” और 2 पतरस 1:11 में “उद्धारकर्ता” कह कर बुलाया जाता है। इसके अतिरिक्त, बाइबल उसे तीतुस 2:13 में “परमेश्वर,” यूहन्ना 1:1 में “वचन,” 1 कुरिन्थियों 15:45 में “अन्तिम आदम,” लूका 1:35 में “परमेश्वर का पुत्र,” मत्ती 21:9 में “दाऊद की संतान,” लूका 19:38 में “राजा,” कुलुस्सियों 1:15 में “सारी सृष्टि में पहिलौठा” और 1 तीमुथियुस 2:5 में “मध्यस्थ” कह कर पुकारती है। निस्संदेह इन सभी शब्दों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं, परंतु ये शब्दों के ऐसे समूह के रूप में रहते हैं जो एक ही व्यक्तित्व अर्थात्, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह, त्रिएकता के दूसरे व्यक्तित्व की ओर संकेत करते हैं। अतः हम देखते हैं कि सामान्य भाषा के समान पवित्रशास्त्र अक्सर एक अवधारणा का उल्लेख करने के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग करता है।

022

दूसरी ओर, पवित्रशास्त्र एक ही शब्द का प्रयोग कई अवधारणाओं को दर्शाने के लिए भी करता है। कभी-कभी ये ऐसे साधारण शब्द और अवधारणाएँ होती हैं जिनका विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत ही कम महत्व है। परंतु अक्सर पवित्रशास्त्र एक शब्द का प्रयोग विभिन्न अवधारणाओं को दर्शाने के लिए करता है, यहाँ तक कि तब भी जब ये अवधारणाएँ धर्मविज्ञान में बहुत ही महत्वपूर्ण हों। आइए पवित्रशास्त्र के दो शब्दों पर ध्यान दें जो विधिवत धर्मविज्ञान में एक केन्द्रीय भूमिका अदा करते हैं। पहले, हम शब्द “धर्मी ठहराए जाने” को देखेंगे, और दूसरा हम शब्द “पवित्रीकरण” को देखेंगे।

023

आइए उन शब्दों के समूह की मुड़ते हुए आरंभ करें जो नए नियम की यूनानी क्रिया डिकायो (δικαιόω) से संबंधित है : ऐसे शब्द जिनका अनुवाद हम अक्सर “धर्मी ठहराना,” “धर्मी” और “धर्मी ठहराए जाने” के रूप में किया जाता है। नया नियम धर्मी ठहराए जाने के बारे में बहुत सी बातें कहता है, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल दो ही पदों पर ध्यान देंगे :

024

पहला, रोमियों 3:28 में पौलुस ने इन शब्दों को लिखा है :

025

इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है (रोमियों 3:28)।

026

026

इस पद में अनुवाद किया गया शब्द “धर्मी ठहराना” डिकायो से अनूदित है। यहाँ और कई अन्य अनुच्छेदों में पौलुस ने स्पष्ट रूप से डिकायो के बारे में इस रूप में कहा है जो मानवीय योग्यता के बिना “केवल विश्वास के द्वारा” होता है। इस भाव में, धर्मी ठहराना धर्मी होने की घोषणा है जो उस समय होती है जब मसीही मसीह को ग्रहण करते हैं और और मसीह की धार्मिकता उनमें जोड़ दी जाती है।

027

शब्द डिकायो का दूसरा उपयोग याकूब 2:24 में प्रकट होता है। वहाँ हम ऐसा पढ़ते हैं:

028

इस प्रकार तुम ने देख लिया है कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है (याकूब 2:24)।

029

029

यहाँ पर याकूब डिकायो, जिसका अनुवाद “धर्मी ठहराए जाने” के रूप में किया गया है, शब्द का इस्तेमाल पौलुस के रोमियों 3:28 के प्रयोग से बिलकुल भिन्न रूप से करता है। पौलुस ने कहा है कि धर्मी ठहराया जाना “व्यवस्था के कामों के बिना, विश्वास के द्वारा” होता है, परंतु याकूब ने कहा कि धर्मी ठहराया जाना “केवल विश्वास से ही नहीं वरन् कर्मों से” होता है।

030

रूचिकर बात यह है कि याकूब और पौलुस दोनों ने अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए अब्राहम का उदाहरण लिया। जब हम रोमियों 4:1-5 में पौलुस के अब्राहम के विचार-विमर्श को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने उत्पत्ति 15 की घटनाओं का उल्लेख किया, जब अब्राहम ने परमेश्वर में विश्वास किया था, और उसका यह विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया था। यह अब्राहम का आरंभिक रूप से धर्मी ठहराया जाना था, जब परमेश्वर ने उसे सबसे पहले केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने की घोषणा की थी।

031

परंतु याकूब ने उत्पत्ति 22 की घटनाओं का उल्लेख किया जो उत्पत्ति 15 की घटनाओं के लगभग 30 वर्षों के पश्चात् घटित हुईं। उत्पत्ति 22 में परमेश्वर ने अब्राहम को परखा ताकि वह उसे मौरिय्याह पहाड़ पर उसके पुत्र इसहाक को बलिदान चढाने की आज्ञा देने के द्वारा उसके विश्वास को प्रमाणित करे। याकूब 2:23 कहता है कि इस तरह से अब्राहम का पहले का विश्वास “पूर्ण” हो गया। इस विषय में याकूब अब्राहम के धर्मी ठहराए जाने की आरंभिक घोषणा के बारे में नहीं, बल्कि उसकी धार्मिकता के “प्रमाण” या “सबूत” के बारे में बात कर रहा था।

032

अतः यह स्पष्ट है कि नए नियम के लेखकों ने यूनानी शब्द डिकायो को कम से कम दो भिन्न अर्थों में इस्तेमाल किया था।

033

अब जो कुछ हमने धर्मी ठहराए जाने के बारे में देखा है वह असामान्य नहीं है। उदाहरण के लिए, यूनानी क्रिया हागिआज़ो (ἁγιάζω) से संबंधित शब्दों के समूह पर ध्यान दें, जिनका अनुवाद अक्सर “पवित्र करना,” “पवित्रीकरण,” “पवित्र लोगों” और यहाँ तक कि “पवित्र” जैसे शब्दों में किया जाता है। शब्दों का यह समूह नए नियम में प्रयुक्त कई भिन्न अवधारणाओं को दर्शाता है। उदाहरण के द्वारा हम उन तीन भिन्न अवधारणाओं को देखेंगे जिन्हें एक लेखक, अर्थात् प्रेरित पौलुस ने इस एक शब्द के द्वारा दर्शाया है।

034

पहली, 1 कुरिन्थियों 6:11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

035

तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे (1 कुरिन्थियों 6:11)।

036

036

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने शब्द “पवित्र करना” या हागिआज़ो (ἁγιάζω) का प्रयोग कुछ ऐसी बात को दर्शाने करने के लिए किया जो परमेश्वर तब करता है जब कोई मसीह को ग्रहण करता है, जिसके द्वारा, वह व्यक्ति परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य बन जाता है और पाप से दूर हो जाता है। कभी-कभी इसे निर्णायक पवित्रता भी कहा जाता है। हम कह सकते हैं कि तात्कालिक संदर्भ में जिन अन्य शब्दों का वह प्रयोग करता है उनके द्वारा उसका यही अर्थ था। उसने कुरिन्थियों के विषय में कहा कि वे पापों से “धोए गए” अर्थात् शुद्ध हो गए, “पवित्र किए गए” अर्थात् परमेश्वर के सम्मुख पवित्र और ग्रहणयोग्य बनाए गए और “धर्मी ठहराए गए”, अर्थात् विश्वास के द्वारा धर्मी घोषित किए गए। यहाँ “पवित्र किया जाना” उस आरंभिक पवित्रीकरण को दर्शाता है जो नए विश्वासी धर्मी घोषित किए जाने के समय प्राप्त करते हैं जब वे धर्मी बनाए जाते हैं और निर्णायक रूप से मसीह के साथ जोड़े जाते हैं।

037

दूसरा, शब्द “पवित्र ठहराया जाना” (या हागिआज़ो) 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 में प्रकट होता है। वहाँ पौलुस ने ये शब्द लिखे :

038

परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो (1 थिस्सलुनीकियों 4:3)।

039

039

इस अनुच्छेद में, पौलुस कुछ ऐसी बात का उल्लेख करता है जिनका अनुसरण विश्वासियों को करना चाहिए। कई बार इसे प्रगतिशील पवित्रता कहा जाता है। पौलुस ने स्पष्ट किया कि लैंगिक अनैतिकता से बचे रहने के साथ इसे जोड़ने के द्वारा पवित्र ठहराए जाने का क्या अर्थ है। यहाँ हागिआज़ो विश्वासियों द्वारा अपने जीवनभर पाप से बचे रहने की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का उल्लेख है।

040

तीसरे अनुच्छेद में, पौलुस ने शब्द हागिआज़ो का प्रयोग एक और ही रूप में किया। सुनिए 1 कुरिन्थियों 7:14 में उसने क्या लिखा है :

041

क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो ,वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परंतु अब तो पवित्र हैं (1 कुरिन्थियों 7:14)।

042

042

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने हागिआज़ो के साथ संबंधित शब्दों के समूह का तीन बार प्रयोग किया जब उसने ऐसे परिवारों का वर्णन किया जिनमें विश्वासी और अविश्वासी जीवनसाथी थे। पहला, उसने कहा कि अविश्वासी पति अपनी विश्वासी पत्नी के कारण पवित्र हागिआज़ो ठहराया जाता है। दूसरा, उसने कहा कि अविश्वासी पत्नी के लिए भी यही बात लागू होती है। और तीसरा, उसने इस शब्द के विशेषण का प्रयोग करके कुरिन्थियों को यह स्मरण दिलाया कि ऐसे परिवारों के बच्चे “पवित्र” होते हैं या पवित्र ठहराए जाते हैं।

043

अब, पौलुस का यह अर्थ नहीं था कि परमेश्वर इन अविश्वासियों को अपने निमित ग्रहणयोग्य होने के लिए पाप से अलग करता है। न ही उसका यह अर्थ था कि विश्वासियों की संतान का उद्धार अपने आप हो जाता है। पौलुस के अन्य लेखनों से यह स्पष्ट है कि उद्धार के लिए उद्धारदायक विश्वास आवश्यक है। बल्कि पौलुस ने तो यहाँ उसका उल्लेख किया जिसे हम बिना उद्धार के पवित्रता कह सकते हैं, एक ऐसी अवधारणा कि एक ऐसे परिवार में पाए जाने वाले अविश्वासी या बच्चे जिसमें कम से कम माता-पिता में से एक सच्चा विश्वासी हो, इस भाव में पवित्र ठहरते हैं कि उस विश्वासी की उपस्थिति के कारण उन्हें बाकी संसार से अलग किया गया है। अतः हम देखते हैं कि पौलुस ने बाइबल आधारित शब्द हागिआज़ो का प्रयोग सच्चे विश्वासियों के आरंभिक अनुभव को, पवित्रता के निरंतर अनुसरण को, और उद्धारदायक विश्वास न होने के बावजूद भी कुछ अविश्वासियों के अलग होने को दर्शाने के लिए किया है।

044

अब जो हमने धर्मी ठहराए जाने और पवित्रीकरण के बारे में देखा है वही बाइबल में पाए जाने वाले बहुत से अन्य धर्मवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण शब्दों के विषय में भी लागू होता है। जैसे सामान्य भाषा में होता है, वैसे ही पवित्रशास्त्र का एक शब्द कई भिन्न अवधारणाओं को दर्शा सकता है। पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले शब्दों और अवधारणाओं के ये जटिल संबंध हमारे तीसरे विषय की ओर अगुवाई करते हैं, विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों और वाक्यांशों की आवश्यकता।

045

आवश्यकता

जब विद्यार्थी का पहली बार विधिवत धर्मविज्ञान से सामना होता है, तो वे उन तकनीकी शब्दों की उस लंबी सूची से घबरा जाते हैं जिन्हें उनको सीखना होता है। मैं आपको बता सकता हूँ कि बहुत बार मुझसे यह पूछा गया है , “हमें इन सब बातों को कहने के लिए इन सब विशेष तरीकों को सीखना क्यों आवश्यक हैॽ हम इन बातों को उसी तरह से क्यों नहीं कह सकते जैसे बाइबल उन्हें कहती हैॽ”

046

सच कहें तो, एक स्तर पर तकनीकी शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। इनके बिना भी धर्मविज्ञान का अध्ययन करना, सीखना और सीखाना संभव है। परंतु दूसरे स्तर पर, तकनीकी शब्द धर्मविज्ञान की ऐसी स्पष्ट पद्धति की रचना करने के लिए आवश्यक हैं जो सारे पवित्रशास्त्र को अपने में समा ले। क्योंकि बाइबल आधारित शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध इतने अधिक हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानियों ने विशेष तरह की शब्दावली को विकसित किया है जो कई बार कृत्रिम प्रतीत होती हैं, परंतु वह वार्तालाप को काफी स्पष्ट बना देती है।

047

समीकरण के दोनों पक्षों की स्पष्टता के लिए इस आवश्यकता को देखना सहायक होगा : सबसे पहले, हम उस असमंजस को देखेंगे जब कई शब्द एक ही अवधारणा को दर्शाते हैं; और दूसरा हम इस असमंजस के उन प्रकारों को देखेंगे जो तब उत्पन्न होते हैं जब एक शब्द बाइबल की कई अवधारणाओं को दर्शाता है। आइए सबसे पहले हम तकनीकी शब्दों की आवश्यकता को देखें जब बाइबल के बहुत से शब्द एक अवधारणा को दर्शाते हैं।

048

अनेक शब्द – एक अवधारणा

जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल के लेखक ने अक्सर कई भिन्न अभिव्यक्तियों में एक समान मूल अवधारणा का उल्लेख करते हैं। अक्सर, यह तथ्य विधिवत धर्मविज्ञानियों के लिए उस स्पष्टता तक पहुँचना मुश्किल बना देता है जिस तक वे पहुँचना चाहते हैं। इसलिए विधिवत धर्मविज्ञानी अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं। यह दिखाने के लिए यह कैसे कार्य करता है, आइए हम उस तरीके को खोजें जिसमें बाइबल कलीसिया की अवधारणा के बारे में बात करती है।

049

कलीसिया की धर्मशिक्षा पर बाइबल की शिक्षा को सामान्यतः “कलीसियाई धर्मविज्ञान” कहा जाता है। यह तकनीकी शब्द एक्लेशिया (ἐκκλησία) से आता है, जो “कलीसिया” के लिए नए नियम का यूनानी शब्द है। धर्मविज्ञानियों के एक ऐसे समूह की कल्पना कीजिए जो एक धर्मविज्ञानी समाज को उनके पसंद के एक विषय पर संबोधित करने आया हो। एक धर्मविज्ञानी शायद इस तरह से आरंभ करे : “आज मैं ‘परमेश्वर के इस्राएल’ की धर्मशिक्षा पर विचार-विमर्श करूँगा।” कोई दूसरा धर्मविज्ञानी ऐसे कह सकता है कि, “मैं 'परमेश्वर के मंदिर’ की धर्मशिक्षा पर विचार विमर्श करूँगा।” और शायद कोई और या कहे, “मैं 'मसीह की देह' पर विचार-विमर्श करूँगा।”

050

निस्संदेह, यह तभी स्पष्ट नहीं होगा कि ये धर्मविज्ञानी किस विषय में बात करना चाहते हैं। आखिरकार, पवित्रशास्त्र में ऐसे वाक्यांश “इस्राएल का परमेश्वर,” “परमेश्वर का मंदिर,” “मसीह की देह” कलीसिया के अतिरिक्त कई अन्य बातों को भी दर्शा सकते हैं। “परमेश्वर का इस्राएल” का संबंध इस्राएल राष्ट्र से भी हो सकता है। “परमेश्वर का मंदिर” पुराने नियम के मंदिर को दर्शा सकता है। “मसीह की देह” यीशु की भौतिक देह को दर्शा सकता है। कौन इसे स्पष्टता से कह सकता है?

051

अब, इन सारे रूपों में कलीसिया के बारे में बात करने में कुछ भी गलत नहीं होगा। नया नियम कलीसिया की एक अवधारणा का उल्लेख इन और अन्य कई रूपों में करता है। फिर भी, यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि किस प्रकार का असमंजस ये कथन उत्पन्न कर सकते हैं। हम इस बात से आश्वस्त नहीं हो सकते कि इन धर्मविज्ञानियों ने समान विषयों पर भिन्न विषयों के पर बात करने की योजना बनाई है। इस असमंजस से बचने के लिए, विधिवत धर्मविज्ञानी कलीसिया पर आधारित बाइबल की शिक्षाओं के विचार-विमर्श के लिए अपने तकनीकी शब्द के रूप में “कलीसियाई धर्मविज्ञान” को स्वीकार करते हैं।

052

सरल शब्दों में कहें तो, असमंजस इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि बाइबल के शब्द एकसमान अवधारणा को दर्शाते हैं। परंतु इस असमंजस को तब दूर किया जा सकता है जब धर्मविज्ञानी अपने अर्थों को स्पष्ट करने के लिए तकनीकी शब्दों का प्रयोग करते हैं।

053

एक शब्द – अनेक विचारधाराएँ

विधिवत धर्मविज्ञानी उस असमंजस से बचने के लिए तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं जो इस वास्तविकता के द्वारा उत्पन्न होता है जिनमें एक एकल शब्द या वाक्यांश पवित्रशास्त्र में कई भिन्न बातों का अर्थ दे सकता है। इसलिए, स्पष्ट वार्तालाप हेतु विधिवत धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्दों के लिए बहुत ही विशेष, और अक्सर कृत्रिम रूप से संकीर्ण, परिभाषाएं विकसित करते हैं।

054

उदाहरण के लिए, उन तरीकों को देखें जिनमें हम विधिवत धर्मविज्ञान में “धर्मी ठहराए जाने” और “पवित्रीकरण” जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। धर्मसुधार आंदोलन के समय, प्रोटेस्टेंटवादियों ने रोमन कैथोलिक धर्मविज्ञान के विपरीत औरडो साल्यूटिस (वह क्रम जिसमें उद्धार को लोगों पर लागू किया जाता है) का वर्णन करने के तरीके को विकसित किया। प्रोटेस्टेंट तकनीकी शब्दावली में, धर्मी ठहराया जाना धार्मिकता की आरंभिक घोषणा है जब परमेश्वर एक व्यक्ति में मसीह की धार्मिकता को जोड़ता है। धर्मी ठहराया जाना परमेश्वरप्रदत्त है, अर्थात्, यह परमेश्वर का कार्य है, और मनुष्य इसमें पूरी तरह से निष्क्रिय हैं। परंतु प्रोटेस्टेंटवादी औरडो साल्यूटिस में पवित्रीकरण को उस पवित्रता का अनुसरण करने की निरंतर प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जो धर्मी ठहराए जाने के बाद मिलती है। इस भाव में, पवित्रीकरण केवल परमेश्वरप्रदत्त नहीं है, बल्कि सहक्रियाशील है, जिसमें न केवल परमेश्वर बल्कि मनुष्य की इच्छा भी सम्मिलित होती है। प्रोटेस्टेंटवादी धर्मविज्ञान में ये विशिष्टताएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

055

परंतु उन धर्मविज्ञानियों द्वारा पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा को स्पष्ट करने की कल्पना करें जो “धर्मी ठहराए जाने” और “पवित्रीकरण” जैसे शब्दों का उन सभी तरीकों में प्रयोग करते हैं जो नए नियम में प्रकट होते हैं।

056

हम धर्मविज्ञानियों से बड़ी आसानी ये कहने की अपेक्षा कर सकते हैं, पहला, “पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने के बाद होता है।” यह कथन उद्धार के प्रोटेस्टेंट क्रम में उपयुक्त बैठता है। परंतु ऐसे धर्मविज्ञानी जो प्रोटेस्टेंटवाद की तकनीकी शब्दावली को बनाए रखने की परवाह नहीं करते, यह भी कह सकते हैं, दूसरा, “पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने के साथ साथ घटित होता है।” वे ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि नया नियम शब्द पवित्रीकरण का प्रयोग आरंभिक पवित्रता को दर्शाने के लिए करता है जो एक व्यक्ति को तब दी जाती है जब वह धर्मी ठहराया जाता है। और वे धर्मविज्ञानी जो प्रोटेस्टेंटवाद की तकनीकी शब्दावली की परवाह नहीं करते हैं, ऐसा भी कह सकते हैं, तीसरा, “पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने के बिना ही होता है।” वे ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि नया नियम बच्चों और विश्वासियों के अविश्वासी जीवनसाथियों के पवित्रीकरण के बारे में बात करता है।

057

ये सारे कथन इस भाव में बाइबल पर आधारित हैं कि वे शब्दों का वैसे प्रयोग करते हैं जैसे बाइबल उनका प्रयोग करती है। परंतु यह देखना कठिन नहीं है कि कैसे ये कथन असमंजसपूर्ण हो सकते हैं। यदि हम एक ऐसे धर्मविज्ञानी को एक के बाद एक बिना स्पष्ट व्याख्या के ये सभी कथन कहते हुए सुनें तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठेंगे। कौनसा कथन सत्य है? पहली दृष्टि में, हम शायद यह कहेंगे कि ये सारे कथन परस्पर विरोधाभासी हैं।

058

इस अध्याय में बाद में, हम और अधिक विस्तार से देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञानी कैसे इस तरह की समस्या का समाधान करते हैं। इस समय, हमारे लिए यह कहना ही पर्याप्त होगा कि विधिवत धर्मविज्ञानी इस तरह के असमंजस को विशेष या तकनीकी शब्दों का विकास करने के द्वारा दूर करने का प्रयास करते हैं जब वे पवित्रीकरण या धर्मी ठहराए जाने जैसे विषयों पर चर्चा करते हैं। वे इन शब्दों को सीमित रूपों में परिभाषित करते हैं जो उनके बनाए निरूपण को सीमित करते हैं।

059

अब क्योंकि हमने विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दों की आवश्यकता को देख लिया है, इसलिए हमें अपना ध्यान उस स्थान की ओर लगाना चाहिए जो तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान में रखते हैं।

060

स्थान

संक्षेप में कहें तो, तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान के मूल खंडों की रचना करते हैं। पहले के एक अध्याय में, हमने देखा था कि प्रोटेस्टेंटवादी विधिवत धर्मविज्ञान मध्यकालीन विद्वतावाद की पद्धतियों का अनुसरण करता है, जो कि विशाल रूप में अरस्तूवादी तर्क से प्रभावित था। इस संबंध में, विधिवत धर्मविज्ञान चार मुख्य चरणों में आगे बढ़ता है : पहला, यह शब्दों के लिए संक्षिप्त परिभाषाओं को विकसित करता है। दूसरा, यह इन शब्दों का प्रयोग कथनों की रचना करने के लिए करता है। तीसरा, यह इन कथनों का प्रयोग न्यायसंगत रूप में धर्मशिक्षारुपी कथनों की रचना करने में करता है। और चौथा, यह अपने तर्कों को धर्मशिक्षा की एक विवेकपूर्ण पद्धति में व्यवस्थित करता है। यद्यपि कोई भी विधिवत धर्मविज्ञान की रचना करते हुए कड़ाई से इस व्यवस्थित प्रक्रिया का अनुसरण नहीं करता, फिर भी यह रूपरेखा विधिवत प्रक्रियाओं के निर्माण की रणनीति को संक्षेप में दर्शाने का एक सहायक तरीका है।

061

हमने जो कहा उसे स्पष्ट करने के लिए आइए एक उदाहरण को देखें। कल्पना कीजिए कि कुछ विधिवत धर्मविज्ञानी मसीह की मृत्यु के विषय पर चर्चा करना चाहते हैं। सबसे पहले, वे पारंपरिक मसीही शब्दों से अपने शब्दों की रचना करेंगे। इस विषय में, हो सकता है कि कई विशेष अभिव्यक्तियाँ मुख्य स्थान ले लें जैसे कि “उद्धारविज्ञान” (उद्धार की शिक्षा), हिस्टोरिया साल्यूटिस (इतिहास में परमेश्वर द्वारा उद्धार का पूर्ण किया जाना), “प्रतिस्थापित प्रायश्चित” (यह विचार कि मसीह किसी के स्थान पर मरा जिस पर परमेश्वर ने अपने क्रोध को उंडेल दिया था), और “ओरडो साल्यूटिस” (वह क्रम जिसमें उद्धार एक व्यक्ति के जीवन में आता है)। वे ऐसे शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं, जैसे “बचाने वाला विश्वास,” “पश्चाताप,” “क्षमा, और निस्संदेह “मसीह”।

062

दूसरा, किसी न किसी तरीके से, विधिवत धर्मविज्ञानी इन शब्दों को विशेष रूप से उन कथनों में शामिल करेंगे जो ऐसे तत्वों को व्यक्त करते हैं जिनमें पवित्रशास्त्र मसीह की मृत्यु के विषय में शिक्षा देता है। उदाहरण के लिए, वे ऐसी बातों को कह या सोच सकते हैं : “उद्धार दो महत्वपूर्ण उप-विषयों में विभाजित होता है : ओरडो साल्यूटिस औरहिस्टोरिया साल्यूटिस ।” “मसीह की मृत्यु विश्वासियों के बदले में एक प्रतिस्थापित प्रायश्चित थी।” “मसीह का प्रतिस्थापित प्रायश्चित ही एक व्यक्ति की क्षमा और उसके अनंत जीवन की एकमात्र आशा है।” “बचाने वाला विश्वास और पश्चाताप ओरडो साल्यूटिस के आवश्यक पहलू हैं।” ये और कई अन्य कथन मसीह की मृत्यु के धर्मविज्ञानी विचार-विमर्श के लिए प्रासंगिक तथ्यों को व्यक्त करेंगे।

063

तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी अपने तकनीकी शब्दों और कथनों को एक धर्मशिक्षारूपी कथन में स्थापित करते हैं जब वे विशेष तथ्यों के बीच तार्किक संबंधों का अनुमान लगाते हैं। उदाहरण के लिए, वे ऐसा एक सार कह या लिख सकते हैं : “मसीह की मृत्यु के उद्धार-संबंधी महत्व को हिस्टोरिया साल्यूटिस और ओरडो साल्यूटिस में देखा जाना आवश्यक है। एक ओर, हिस्टोरिया साल्यूटिस, अर्थात् उद्धार का इतिहास मसीह की मृत्यु में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। उसकी मृत्यु पापों की अनंत क्षमा के लिए एक प्रतिस्थापित प्रायश्चित थी। दूसरी ओर, कोई भी व्यक्ति वास्तव में तब तक क्षमा प्राप्त नहीं करता और बचाया नहीं जाता, जब तक मसीह के प्रायश्चित के प्रभावों को ओरडो साल्यूटिस में उस पर लागू नहीं किया जाता। जब लोग क्षमा के लिए व्यक्तिगत रूप से बचाने वाले विश्वास और मसीह में भरोसे के द्वारा अपने पाप का पश्चाताप करते हैं, तो वे अनंत जीवन को प्राप्त करते हैं।”

064

अन्त में, मसीह के प्रायश्चित के बारे में ये तकनीकी शब्द, कथन और धर्मशिक्षारूपी कथन विधिवत धर्मविज्ञानियों की अगुवाई एक विशाल दृष्टिकोण की ओर करेंगे। वे मसीह की मृत्यु के प्रतिस्थापित प्रायश्चित पर अपने विचार-विमर्श को विधिवत धर्मविज्ञान की विशाल पद्धति से जोड़ेंगे और इस प्रकार इस तरह के प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करेंगे। मसीह की मृत्यु किस प्रकार उद्धार-विज्ञान के व्यापक चित्र में उपयुक्त बैठती है? उद्धार-विज्ञान किस प्रकार परमेश्वर-विज्ञान, मानव-विज्ञान, कलीसियाशास्त्र, और युगान्त-विज्ञान से संबंध रखता है?

065

विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया को देखना कुछ हद तक बनावटी ही है। वास्तविक प्रक्रिया में ये सारे चरण परस्पर बहुत अधिक निर्भर हैं और परस्पर आदान-प्रदान के बहुत से जालों का निर्माण करते हैं। जब धर्मविज्ञानी वास्तव में विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं, तो वे हर समय इन चारों चरणों में शामिल रहते हैं। परंतु उस क्रम की परवाह किए बिना जिसमें धर्मविज्ञानी वास्तव में कार्य करते हैं, यह विषय फिर भी बना रहता है कि तकनीकी शब्द विधिवत धर्मविज्ञान के अधिकांश मूल खंडों या इकाइयों का निर्माण करते हैं।

066

अब क्योंकि हमने धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के सामान्य दिशा-निर्धारण को स्थापित कर लिया है, इसलिए हमें इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : तकनीकी शब्दों का निर्माण। कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी उन विशेष अभिव्यक्तियों की रचना करते हैं, जिनका वे प्रयोग करते हैंॽ

067

निर्माण

मुझे अभी भी याद है जब सेमीनरी का एक हताश विद्यार्थी कक्षा के बाद मेरे पास आया। उसने मुझे देखा और कहा। मैं बहुत वर्षों से मसीही हूँ, परंतु आप जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं उनमें से आधे भी मेरी समझ में नहीं आते। आपको ये सारे अपरिचित शब्द कहाँ से मिलते हैंॽ मैंने उसे देखा और उससे कहा, “जिन अधिकांश शब्दों को मैं प्रयोग करता हूँ वे मेरे अपने नहीं हैं। मैंने इन्हें विधिवत धर्मविज्ञानियों से प्राप्त किया है।” और तब उसने मुझे फिर से देखा और कहा, “ठीक है, तो मुझे बताइए कि उन्हें ये शब्द कहाँ से मिले।”

068

यह स्पष्ट था कि तकनीकी शब्दावली जिनका प्रयोग हम सेमीनरी में करते हैं इस व्यक्ति की समझ से परे थे और उसने मुझसे एक बहुत अच्छा प्रश्न पूछा था। विधिवत धर्मविज्ञान में ये सारे विशेष शब्द कहाँ से आए हैं?

069

वास्तव में, विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों की रचना कई तरीकों से की जाती है। इनके विकसित होने के कुछ मुख्य तरीकों की खोज करने के लिए हम दो दिशाओं में देखेंगे। पहला, हम यह देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत से तकनीकी शब्द बाइबल आधारित शब्दों से आते हैं। और दूसरा, हम देखेंगे कि कई अन्य तकनीकी शब्द वास्तव में बाइबल आधारित स्रोतों के बाहर से आते हैं। आइए सबसे पहले हम कुछ ऐसे तरीकों को देखें जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी अपनी विशेष शब्दावली की रचना बाइबल पर आधारित होकर करते हैं।

070

बाइबल आधारित शब्द

अधिकांश मसीही बहुत राहत अनुभव करते हैं जब धर्मविज्ञानी अपने धर्मविज्ञान में बाइबल आधारित अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारा विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के प्रति सच्चा हो। अतः तब बहुत राहत अनुभव होती है जब धर्मविज्ञानी बाइबल जैसा ही बोलते प्रतीत होते हैं। फिर भी, हमें यह महसूस करना चाहिए कि तकनीकी शब्दावली के रूप में बाइबल आधारित शब्दावाली का प्रयोग धर्मविज्ञान में करना उतना सरल नहीं है, जितना यह प्रतीत होता है।

071

विधिवत धर्मविज्ञानी वास्तव में कम से कम तीन रूपों में पवित्रशास्त्र से तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं : पहला, बाइबल-आधारित किसी शब्द पर बाइबल-आधारित अन्य शब्दों से अधिक बल देने के द्वारा जो कि एक ही जैसी अवधारणा को व्यक्त करते हैं; दूसरा, बाइबल-आधारित शब्द के किसी अर्थ पर उसी बाइबल-आधारित शब्द के अन्य अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा; और तीसरा, बाइबल-आधारित शब्दों के नए अर्थों की रचना करने के द्वारा, अर्थात् ऐसे अर्थों की जो पवित्रशास्त्र में कभी प्रकट नहीं होते। इन तीनों दृष्टिकोणों का विस्तार से अध्ययन करना उपयोगी होगा। इसलिए आइए उन तरीकों के साथ आरंभ करें जिनमें विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित एक शब्द पर दूसरे शब्दों से अधिक बल देते हैं।

072

एक शब्द पर बल देना

जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल लेखक अक्सर एक ही विचार को दर्शाने के लिए एक से अधिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। अपने विचार-विमर्श में स्पष्टता लाने के लिए विधिवत धर्मविज्ञानी निरंतर कई शब्दों में से एक शब्द को चुनते हैं जो तकनीकी शब्द के रूप में पवित्रशास्त्र की एक अवधारणा को दर्शाता है, और वे फिर इसी तकनीकी शब्द का पूरी तरह से प्रयोग करते हैं।

073

हमारे अर्थ को स्पष्ट करने के लिए, हम नए जीवन की धर्मशिक्षा को देखेंगे। विधिवत धर्मविज्ञान में “नया जीवन” एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग परमेश्वर के उस कार्य के वर्णन के लिए किया जाता है जिसके द्वारा नया आत्मिक जीवन किसी व्यक्ति को दिया जाता है। यह पहले परिवर्तन या बदलाव को दर्शाता है जो एक व्यक्ति में तब होता जब वह पाप और मृत्यु में से निकलकर मसीह में नए जीवन में प्रवेश करता है।

074

पवित्रशास्त्र में बहुत से शब्द इस अवधारणा को दर्शाते हैं। शब्द “नया जीवन” यूनानी शब्द पालिगेनेसिया (παλιγγενεσία) का अनुवाद है, जो नए नियम में केवल दो ही बार पाया जाता है — एक बार मत्ती 19:28 में और एक बार तीतुस 3:5 में। और तीतुस 3:5 ही पवित्रशास्त्र में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ “नया जीवन” का प्रयोग इस रूप में किया गया है जो मसीह में नए जीवन के आरंभ को दर्शाता है। परंतु इसी अवधारणा का वर्णन अन्य शब्दों में भी किया गया है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 3:3 में हम यूनानी वाक्यांश गिनाओ अनोथेन (γεννάω ἄνωθεν), पाते हैं जिसका अनुवाद “नया जन्म” या “नए सिरे से जन्म लेने” के रूप में किया गया है, और 1 पतरस 1:3 में हम यूनानी शब्द अनागेनाओ (ἀναγεννάω) को पाते हैं, जिसका अनुवाद अक्सर “नए जन्म” के रूप में किया जाता है। याकूब 1:18 में शब्द अपोकुएओ (ἀποκυέω) है, जिसका अर्थ “जन्म देना” या “बाहर लाना” है। और इफिसियों 2:10 शब्द क्टिजो (κτίζω) का उपयोग करता है, जिसका अर्थ “रचना करना” है। गलातियों 6:5 में भी नए जीवन की अवधारणा को शब्द काईने क्टिसिस (καινὴ κτίσις) या “नई सृष्टि” से और इफिसियों 4:24 में काईनोस आंथरोपोस (καινός ἄνθρωπος) या “नए मनुष्य” से दर्शाया गया है।

075

यद्यपि बहुत से शब्द एकसमान अवधारणा को दर्शाते हैं, फिर भी विधिवत धर्मविज्ञानी इन सब का उल्लेख “नए जीवन” के शीर्षक के अंतर्गत ही करते हैं। इस अवधारणा के लिए अन्यों की अपेक्षा इस बाइबल-आधारित शब्द का चुनाव सरलता और स्पष्टता के लिए किया गया है।

076

एक अर्थ पर बल देना

बाइबल-आधारित एक शब्द पर दूसरे से अधिक बल देने के अतिरिक्त, विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित शब्द के एक अर्थ पर उसके अन्य अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं।

077

जैसा कि हम देख चुके हैं, पवित्रशास्त्र के लेखक अक्सर एक ही शब्द का प्रयोग कई भिन्न अर्थों के लिए करते हैं। ऐसी परिस्थिति द्वारा लाए गए असमंजस को दूर करने का एक तरीका जिसका प्रयोग विधिवत धर्मविज्ञानी करते हैं, वह है बाइबल-आधारित एक शब्द के अर्थ पर उसके अन्य अर्थों से अधिक बल देना।

078

सभी विश्वसनीय विधिवत धर्मविज्ञानी यह जानते हैं कि शब्द डिकायो (δικαιόω) का अनुवाद अक्सर “धर्मी ठहराना” या “धर्मी ठहराया जाना” के रूप में किया जाता है, और इसका प्रयोग नए नियम में भिन्न रूपों में किया जाता है। जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा था, यह कम से कम दो भिन्न अवधारणाओं को दर्शाता है। रोमियों 3:28 में यह केवल विश्वास के द्वारा धार्मिकता की आरंभिक घोषणा को दर्शाता है, वहीं याकूब 2:24 में यह कामों के द्वारा विश्वास के प्रमाण या सबूत को दर्शाता है।

079

कल्पना कीजिए कि क्या होगा यदि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्द धर्मी ठहराए जाने का प्रयोग निरंतर रूप से दोनों ही तरीकों में करें। यदि उनसे पूछा जाए, “कैसे एक व्यक्ति धर्मी ठहराया जाता हैॽ” उनमें से एक का कहना शायद यह होगा, “मनुष्य केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है न कि कामों के द्वारा।” पर दूसरा शायद यह कहे, “मनुष्य कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है, न केवल विश्वास के द्वारा।” इस तरह की धर्मविज्ञानी वार्तालाप जल्द ही भ्रामक बन जाएगी।

080

विधिवत धर्मविज्ञानियों द्वारा इस असमंजस को दूर करने का एक तरीका डिकायो शब्द के बाइबल-आधारित एक अर्थ पर उसके दूसरे अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा “धर्मी ठहराए जाने” को धर्मविज्ञानी तकनीकी शब्द में परिवर्तित कर देना है। रोमन कैथोलिक कलीसिया की झूठी शिक्षाओं के प्रत्युत्तर में प्रोटेस्टेंटवादियों ने धर्मी ठहराए जाने की “धार्मिकता की उदघोषणा” के अर्थ पर बल दिया है। धर्मी ठहराया जाना कामों के बिना केवल अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा होता है। इसलिए जब पारंपरिक प्रोटेस्टेंटवादियों ने बिना किसी योग्यता के “धर्मी ठहराए” जाने के शब्द का प्रयोग किया, तो उनके कहने का यही अर्थ था।

081

अतः हम देखते हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्द के एक अर्थ पर उसके दूसरे अर्थों से अधिक बल देने के द्वारा उस असमंजस पर विजय प्राप्त कर लेते है जो बाइबल के शब्दों के भिन्न अर्थों से उत्पन्न होता है। यह चुनाव तब उस अभिव्यक्ति को तकनीकी धर्मविज्ञानी शब्द होने का महत्व प्रदान करता है।

082

एक शब्द या एक अर्थ पर अधिक बल देने के अतिरिक्त विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित शब्दों के लिए नए अर्थों की रचना करने के द्वारा बाइबल-आधारित भाषा से तकनीकी शब्दों की रचना भी करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे बाइबल-आधारित शब्दों का प्रयोग ऐसे करते हैं जैसे बाइबल में कभी नहीं किए गए।

083

नए अर्थों की रचना करना

बाइबल-आधारित शब्दों के लिए नए अर्थों की रचना करने का एक जाना पहचाना उदाहरण तकनीकी धर्मविज्ञानी अभिव्यक्ति “अनुग्रह की वाचा” का है। इस वाक्यांश का प्रयोग पारंपरिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान में परमेश्वर के उसके लोगों के साथ संबंध को दर्शाने के लिए किया गया है, न केवल नए नियम में बल्कि संपूर्ण बाइबल के इतिहास में, अर्थात् पाप में पतन होने के समय से लेकर मसीह के महिमा में पुनरागमन के समय तक। यह एक ऐसी विस्तृत अवधारणा है जिसमें पाप में पतन होने के बाद की सभी ईश्वरीय वाचाएँ सम्मिलित हैं, जैसे परमेश्वर की नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और मसीह के साथ बाँधी गई वाचाएँ। सुनिए किस प्रकार विश्वास का वेस्टमिंस्टर अंगीकरण अध्याय 7 के भाग 3 में अनुग्रह की वाचा का वर्णन करता है :

084

084

मनुष्य ने अपने पतन के द्वारा स्वयं को कामों की वाचा के आधार पर जीवन के लिए अयोग्य ठहरा दिया; परंतु प्रभु उस दूसरी वाचा बाँधने में प्रसन्न हुआ, जिसे सामान्यतः अनुग्रह की वाचा कहा जाता है, जिसके द्वारा वह पापियों को यीशु मसीह के द्वारा मुफ्त में जीवन और उद्धार प्रदान करता है।

085

085

ध्यान दें कि अंगीकरण यह सुझाव नहीं देता कि शब्द-समूह “अनुग्रह की वाचा” बाइबल में पाया जाता है। अब यह स्पष्ट है कि शब्द “वाचा” और “अनुग्रह” बाइबल-आधारित शब्द हैं, परंतु वे पवित्रशास्त्र में इस तकनीकी अर्थ के साथ एक दूसरे के साथ जुड़कर प्रकट नहीं होते। फलस्वरूप, अंगीकरण कहता है कि इस वाचाई प्रबंध को “सामान्यतः अनुग्रह की वाचा” कहा जाता है। पिता और पुत्र परमेश्वर के बीच का वह संबंध जो बाइबल के संपूर्ण इतिहास में प्रकट होता रहता है, उसे सामान्यतः धर्मविज्ञानियों के द्वारा इस रूप में कहा जाता है, परंतु बाइबल के द्वारा नहीं। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने बाइबल आधारित अभिव्यक्ति का नए तरीकों में प्रयोग करने के द्वारा इस तकनीकी शब्द की रचना की है। यह निश्चित है कि इस शब्दावली “अनुग्रह की वाचा” के द्वारा व्यक्त अवधारणा बाइबल-आधारित अवधारणा है। बाइबल में परमेश्वर के बचाने वाले संपूर्ण कार्य में एकता है, और यह एकता अनुग्रहकारी और वाचाई है। परंतु पवित्रशास्त्र में इस व्यापक अवधारणा के लिए कोई एक शब्द नहीं है, इसलिए विधिवत धर्मविज्ञानियों ने इसकी अभिव्यक्ति के लिए इस तकनीकी शब्द की रचना की है।

086

अतः हम देखते हैं कि धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित भाषा का कम से कम तीन तरीकों से प्रयोग करते हुए तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं : वे किसी एक अवधारणा के लिए किसी एक बाइबल-आधारित शब्द पर दूसरों से अधिक बल देते हैं; वे बाइबल के किसी एक शब्द के अर्थ पर उसके दूसरे अर्थों से अधिक बल देते हैं; और वे बाइबल-आधारित शब्दों को नया अर्थ प्रदान करते हैं। इन माध्यमों के द्वारा विधिवत धर्मविज्ञानी मसीही विश्वास के उनके विचार-विमर्श की स्पष्टता को सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं।

087

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित भाषा का प्रयोग करते हुए किस प्रकार तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं, इसलिए हमें विधिवत धर्मविज्ञान में विशेष शब्दावली की रचना के दूसरे मुख्य तरीके की ओर मुड़ना चाहिए। विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र से बाहर के स्रोतों से भी अपनी शब्दावली लेते हैं।

088

बाइबल से बाहर की भाषा

हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि महान आदेश को पूरा करने के लिए मसीही धर्मविज्ञानियों को यह सीखना आवश्यक है कि विभिन्न संस्कृतियों में जहाँ परमेश्वर ने उन्हें रखा है वहाँ मसीही शिक्षाओं को कैसे सिखाया जाए। इसीलिए धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञानियों ने अक्सर स्वयं को नीओ-प्लेटोवादी शब्दावली में व्यक्त किया,और इसीलिए विद्वतावादियों ने अक्सर स्वयं को अरस्तूवादी शब्दावली में व्यक्त किया। प्रोटेस्टेंटवादी विधिवत धर्मविज्ञानियों ने भी बाइबल से बाहर के शब्दों का प्रयोग करते हुए निरंतर मसीह की आज्ञा का अनुसरण किया है, उन्होंने आरंभिक समयों की शब्दावली और अपनी समकालीन संस्कृतियों से लिए शब्दों का प्रयोग करते हुए ऐसा किया है।

089

ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनमें बाइबल से बाहर के शब्द विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट होते हैं, परंतु तीन मुख्य दृष्टिकोणों के विषय में सोचना हमारे लिए सहायक होगा। पहला, विधिवत धर्मविज्ञानी उस सामान्य शब्दावली को अपनाते हैं जो उनके लिए उपलब्ध होती है। दूसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल से बाहर के दर्शनशास्त्रीय और धार्मिक शब्दों को नए अर्थ प्रदान करते हैं। तीसरा, वे अक्सर बाइबल से बाहर की शब्दावली को बाइबल-आधारित अभिव्यक्तियों के साथ जोड़ देते हैं। सबसे पहले इस पर ध्यान दें कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी बातों को कहने के उन सामान्य तरीकों का प्रयोग करते हैं जो बाइबल से बाहर के हैं।

090

सामान्य शब्दावली

विधिवत धर्मविज्ञानी जब पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को स्पष्ट करते हैं तो उनके द्वारा बाइबल से बाहर की शब्दावली से शब्दों को लेने का शायद सबसे सरल तरीका उनकी संस्कृतियों की सामान्य शब्दावली को अपनाने का है। धर्माध्यक्षीय समय में शब्दों और वाक्यों का यह समूह व्यापक रूप से यूनानी भाषा से आया जो उस समय के भूमध्यसागरीय संसार में मसीही विद्वानों की प्राथमिक भाषा थी। मध्यकालीन समय में मसीही विद्वानों की प्राथमिक भाषा लैटिन हो गई थी। आधुनिक समय में मसीहियों ने ऐसी संस्कृतियों की विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है जिनमें मसीहियत ने विशेष स्थान बनाया है।

091

बाइबल से बाहर की सामान्य शब्दावली का प्रयोग करने का एक सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण शब्द “त्रिएकता” है। शब्द “त्रिएकता” सबसे पहले सन् 180 के लगभग प्रकट हुआ जब अंतकिया के थियुफिलुस ने यूनानी शब्द ट्रिआस (τρίας) का प्रयोग परमेश्वरत्व के त्रिएक होने के वर्णन के लिए किया। इस शब्द का बाद में लैटिन में ट्रिनिटास के रूप अनुवाद किया गया, जिसका अर्थ है “त्रय”। शब्द त्रिएकता बाइबल में कभी प्रकट नहीं होता। न ही यह एक तकनीकी, दर्शनशास्त्रीय या धार्मिक अभिव्यक्ति का शब्द था। यह एक सरल सा शब्द था जिसे तीन के सामान्य शब्द से बनाया गया था। अंततः बाइबल से बाहर का यह शब्द एक ऐसा शीर्षक बन गया जिसके अंतर्गत धर्मविज्ञानियों ने इस तथ्य को अभिव्यक्त किया कि पवित्रशास्त्र कई बार परमेश्वर को तीन और कई बार एक के रूप में दर्शाता है। जैसा कि सन् 381 में कोंसटैंटीनोपल की प्रथम परिषद के बिशप ने लिखा :

092

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का एकीय परमेश्वरत्व, सामर्थ्य और तत्व है, उनका एक ऐसा गौरव है जो एक जैसे सम्मान, और समान अनंत प्रभुत्व के योग्य है, वे तीन सबसे सिद्ध सारतत्वों, या तीन सिद्ध व्यक्तित्वों में हैं।

093

093

अतीत और वर्तमान में, कलीसिया ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के संबंधों के बारे में कई झूठी शिक्षाओं का सामना किया है। सरल शब्दों में कहें तो कुछ समूहों ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के एकत्व पर आवश्यकता से अधिक बल देने का प्रयास किया है, तो अन्यों ने उनकी भिन्नता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया है।

094

परमेश्वरत्व की विविधता और एकता पर पवित्रशास्त्र की संपूर्ण शिक्षा को दर्शाने के लिए कट्टरवादी मसीही बाइबल से बाहर की अभिव्यक्ति “त्रिएकता” का प्रयोग एक तकनीकी शब्द के रूप में यह संकेत देने के लिए करते हैं कि परमेश्वर “तीन सिद्ध व्यक्तित्व” तो है, परंतु “सामर्थ्य और तत्व में एक” ही है। बाइबल से बाहर के इस शब्द का प्रयोग उन विषयों में स्पष्टता लाने में सहायता करता है जिनका हम अध्ययन करते हैं। परमेश्वर त्रिएकता है।

095

दूसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी गैरमसीही दर्शनशास्त्रीय और धार्मिक विचार-विमर्शों में प्रयोग की जाने वाली बाइबल से बाहर की शब्दावली के लिए नए अर्थों की रचना भी करते हैं। वे इन शब्दों को अपनाते हैं और इनके अर्थों में संशोधन कर देते हैं ताकि वे मसीही शिक्षा के अनुरूप हों और उसे स्पष्ट करें।

096

दर्शनशास्त्रीय शब्दावली

सुसमाचारिक मसीही विश्वासी अक्सर तब आपत्ति करते हैं, जब उन्हें महसूस होता है कि विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत से शब्द बाइबल से बाहर के धार्मिक और दर्शनशास्त्रीय स्रोतों से आए हैं। इसलिए हमें यहाँ रूककर एक-दो टिप्पणियाँ देनी चाहिए। हमारा डर उचित है कि धर्मविज्ञानी ऐसे शब्द का प्रयोग करने के द्वारा भटकाए जा सकते हैं, जो बाइबल में नहीं पाया जाता। वास्तव में हमें सदैव मसीही धर्मविज्ञान में झूठे गैरमसीही विचारों के घुस आने के विरुद्ध सचेत रहना आवश्यक है। परंतु इसके साथ-साथ जब तक विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र को अपने परम सर्वोच्च न्यायी के रूप में बनाए रखते हैं, तो बाइबल से बाहर की धार्मिक और दर्शनशास्त्रीय अभिव्यक्तियाँ बहुत सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

097

बाइबल के एक चरित्र का उदाहरण जो ठीक ऐसा ही करता है, प्रेरितों के काम 17 में पाया जाता है। यह एक जाना-पहचाना अनुच्छेद है जहाँ पौलुस ने एथेंस में अरियुपगुस की भीड़ को संबोधित किया था। अपने संबोधन में एक स्थान पर पौलुस ने सकारात्मक रूप से यूनानी कवियों को उद्धृत किया था। सुनिए प्रेरितों के काम 17:28-29 में उसने क्या कहा :

098

जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, “हम तो उसी के वंशज हैं।” अत: परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों (प्रेरितों के काम 17:28-29)।

099

099

ये अभिव्यक्ति “हम तो उसी के वंशज हैं” का प्रयोग पहले दो यूनानी कवियों, क्लीनथेस और अरातुस, के द्वारा भिन्न-भिन्न समयों में किया गया था। परंतु पौलुस ने बड़े आत्मविश्वास के साथ इस ग़ैरयहूदी अभिव्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति के रूप में ले लिया और पद 29 में यह कहा : “इसलिए क्योंकि हम तो परमेश्वर के वंशज... हैं।” अब, क्लीनथेश और अरातुस ने वास्तव में यूनानी देवताओं के मुखिया ज्यूस का उल्लेख किया था, न कि बाइबल के परमेश्वर का। परंतु पौलुस ने इन यूनानी कवियों की शब्दावली को एक विशिष्ट मसीही अर्थ दिया, और इस बात पर बल दिया कि वह मसीही परमेश्वर था, जिसने मनुष्यजाति की सृष्टि की थी, न कि ज्यूस।

100

पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए विधिवत धर्मविज्ञानी यदि बाइबल-आधारित अवधारणाओं को दर्शाने के लिए उन्हें पुनः परिभाषित करें तो वे भी कभी-कभी गैरमसीही धार्मिक और दर्शनशास्त्रीय शब्दावली को ले सकते हैं।

101

एक महत्वपूर्ण समय में जब यह घटित हुआ तो वह मसीह की धर्मशिक्षा “मसीहशास्त्र” के इर्द-गिर्द था। सन् 451 में चाल्सीदोन की परिषद में मसीह की शिक्षा पर हुए विवाद के प्रति कलीसिया के प्रत्युत्तर को सुनिए। वहाँ हम यह पढ़ते हैं कि :

102

[मसीह] सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य है..., बिना किसी असमंजस के, बिना किसी परिवर्तन के, बिना किसी विभाजन के, बिना किसी अलगाव के दो स्वभावों में पहचाना गया है; स्वभावों की यह विशिष्टता किसी भी तरह से एकता के कारण निरस्त नहीं होती, बल्कि प्रत्येक स्वाभाव की विशेषताओं को संरक्षित रखा गया है और वे एक साथ मिलकर एक व्यक्तित्व और तत्व की रचना करते हैं, न कि दो व्यक्तित्वों में विभाजित या अलग-अलग तत्वों की।

103

103

यह कथन मसीह का ऐसे शब्दों में वर्णन करता है जो बाइबल की शब्दावली से भिन्न हैं। परिषद ने बाइबल से बाहर के स्रोतों से इन्हें प्राप्त किया और मसीह के स्वभावों के बारे में बताया। परिषद ने यह भी कहा कि मसीह के स्वभाव “बिना किसी असमंजस के” भिन्न हैं, यह भी कि वे “बिना किसी परिवर्तन के” हैं और एक दूसरे के द्वारा बदले नहीं जाते हैं, परंतु वे फिर भी “बिना किसी विभाजन, बिना किसी अलगाव” के मसीह में “एक व्यक्तित्व” के रूप में एकता में अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। सच्चाई तो यह है कि शब्द “व्यक्तित्व,” जैसा कि इस संदर्भ में प्रयोग किया है, शायद उस समय की ऐसी वैधानिक शब्दावली से लिया गया हो जिसमें एक “व्यक्तित्व” व्यक्तिगत पहचान का एक कानूनी शब्द था।

104

तकनीकी भाषा पवित्रशास्त्र से निकल कर नहीं आई, परंतु यह पवित्रशास्त्र के प्रति सच्ची थी। और यह सटीकता के साथ मसीह के बारे में कलीसिया की धर्मशिक्षा को बताने के लिए आवश्यक थी।

105

तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित और बाइबल से बाहर के शब्दों को अपनी तकनीकी धर्मविज्ञानी शब्दावली की रचना करने के लिए आपस में जोड़ भी देते हैं।

106

संयोजित शब्दावली

इस तरह का संयोजन कई भिन्न तरीकों से होता है, कुछ दूसरों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, परंतु इसका एक स्पष्ट उदाहरण पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा में पाया जा सकता है। जैसा कि हम इस अध्याय में देख चुके हैं, शब्द पवित्रीकरण का प्रयोग नए नियम में भिन्न तरीकों से हुआ है। शब्द के इन प्रयोगों ने पवित्रीकरण शब्द, जो कि बाइबल से आता है, को उन विशेषणों के साथ संयोजित करने का अवसर उत्पन्न किया है जो बाइबल में से नहीं हैं। पहले खंड में हमने देखा है कि 1 कुरिन्थियों 6:11 में क्रियाहागिआज़ो (ἁγιάζω) उस परिवर्तन को दर्शाती है जो कि एक व्यक्ति में तब आता है जब वह मसीह में पहली बार विश्वास करता है। दूसरे खंड में, हमने देखा है कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 क्रिया हागिआज़ो का प्रयोग पवित्रता के उस निरंतर होने वाले विकास के लिए करता है जिसका अनुभव मसीहियों को उनके दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना है।

107

विधिवत धर्मविज्ञानियों ने पवित्रीकरण के विभिन्न प्रकारों के बारे में बोलने के द्वारा पवित्रीकरण की धर्मशिक्षा के प्रति स्पष्टता को प्रकट किया है। वे एक व्यक्ति के द्वारा पहले-पहल विश्वास करने पर हुए पवित्रीकरण को “स्थाई पवित्रीकरण” कहते हैं, इसमें वे बाइबल-आधारित शब्द “पवित्रीकरण” के साथ बाइबल से बाहर के शब्द “स्थाई” को यह दर्शाने के लिए जोड़ देते हैं कि इस प्रकार का पवित्रीकरण सदैव के लिए एक ही बार होता है, और यह एक व्यक्ति को पवित्रता की दशा, अर्थात् संसार से अलगाव और परमेश्वर के प्रति पवित्र होने की ओर ले जाता है। शब्द “प्रगतिशील पवित्रीकरण” का प्रयोग पवित्रता में बढ़ते रहने के निरंतर प्रगतिशील अनुभव, संसार से अलग होने और परमेश्वर के प्रति पवित्रता में बढ़ने को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस विषय में शब्द “पवित्रीकरण” बाइबल से आता है, परंतु शब्द “प्रगितशील” बाइबल के बाहर से आता है। जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं कि ये संयोजित तकनीकी शब्द बहुत अधिक उपयोगी हो सकते हैं। पवित्रीकरण के बारे में केवल बोलने की अपेक्षा, इस तरह की योग्यताएँ यह स्पष्ट करने में सहायता करती हैं कि धर्मविज्ञानियों के कहने का क्या अर्थ है। वे पवित्रशास्त्र में “पवित्रीकरण” शब्द के विभिन्न प्रयोगों में भिन्नता करने के लिए उनकी सहायता करती हैं।

108

अतः हम देखते हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानी दो मूलभूत रूपों में तकनीकी शब्दों की रचना करते हैं। वे पवित्रशास्त्र से लेते हैं, और वे बाइबल के बाहर से इन्हें लेते हैं। इन माध्यमों के द्वारा धर्मविज्ञानी ऐसे शब्दों को प्रदान करते हैं जो उनके विचर-विमर्शों को स्पष्ट करते हैं और विधिवत धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए मूल खंडों के रूप में कार्य करते हैं।

109

अब क्योंकि हमने विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के प्रति एक सामान्य दिशा-निर्धारण को देख लिया है, और यह भी देख लिया है कि वे उनकी रचना कैसे करते हैं, इसलिए हमें अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : तकनीकी शब्दों के मूल्य और खतरे।

110

मूल्य और खतरे

विधिवत धर्मविज्ञान में पाए जाने वाले विशेष शब्दों और वाक्यों के द्वारा किन लाभों और हानियों को प्रस्तुत किया जाता है? हमारे अध्याय के इस समय तक मैं आश्वस्त हूँ कि तकनीकी शब्दों के इस पूरे विषय के बारे में आपमें से कइयों में भिन्न-भिन्न भावनाएँ होंगी। शायद आपमें से कुछ उनके बारे में जितना ज्यादा हो सके उतना सीखने के लिए तैयार हों, और वहीं अन्य लोग इससे चकित हों कि क्या इतनी जटिल बातों को सीखने में इतनी परेशानियाँ उठाना उचित है भी या नहीं। जैसा कि हम देखेंगे, यह महत्वपूर्ण है कि इस बात को न तो आवश्यकता से अधिक और न ही आवश्यकता से कम महत्व दिया जाना चाहिए कि विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी भाषा हमारी सहायता कैसे कर सकती है। एक संतुलित दृष्टिकोण सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होगा क्योंकि तकनीकी शब्द महत्वपूर्ण लाभों या हानियों को प्रस्तुत करते हैं।

111

इस विषय पर और खोज करने के लिए हम विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली को देखेंगे जब यह मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण करने के लिए तीन मुख्य स्रोतों से संबंधित है। दूसरे अध्यायों में हमने यह सुझाव दिया है कि परमेश्वर ने मसीहियों को विशेष और सामान्य प्रकाशन से सीखने के तीन मुख्य तरीके प्रदान किए हैं। हम पवित्रशास्त्र की सावधानी से की गई ऐसी व्याख्या से विशेष प्रकाशन की समझ प्राप्त करते हैं, जो मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके साथ-साथ, परमेश्वर ने हमें दो अन्य स्रोतों पर ध्यान देने के द्वारा सामान्य प्रकाशन से लाभ लेने के लिए भी बुलाया है। हम दूसरे लोगों, विशेषकर मसीहियों से सीखने के द्वारा सामान्य प्रकाशन के एक पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और हम मसीही जीवन और मसीह के लिए जीने के हमारे व्यक्तिगत अनुभव पर ध्यान देने के द्वारा सामान्य प्रकाशन के एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जब हम अपने व्यक्तिगत पवित्रीकरण में बढ़ने का प्रयास करते हैं।

112

क्योंकि ये स्रोत किसी भी दिए गए विषय पर हमें जानकारी प्रदान करते हैं इसलिए इनकी खोज करना एक उत्तरदायी मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करने में हमारी सहायता करता है। व्याख्या के साक्षियों के रूप में समुदाय में सहभागिता और मसीही जीवन किसी एक विशेष विषय पर सामंजस्यपूर्ण और महत्वपूर्ण होते हैं, तो उस विषय के लिए हमारी दृढ़ता और भरोसे का स्तर सामान्य रूप से बढ़ जाना चाहिए। परंतु जब ये साक्षियाँ असामंजस्यपूर्ण और कम महत्वपूर्ण होती हैं तो किसी दिए गए विषय पर हमारी दृढ़ता और भरोसे के स्तर सामान्यतः निम्न हो जाने चाहिए। जब हम मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं तो ये परस्पर निर्भर रहने वाले स्रोत, व्याख्या, समुदाय में सहभागिता और मसीही जीवन, हमारी असंख्य रूपों में सहायता करते हैं।

113

क्योंकि ये स्रोत बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, इसलिए हम विधिवत प्रक्रियाओं में इनमें से प्रत्येक शब्द के आधार पर तकनीकी शब्दों के मूल्य और खतरों की खोज करेंगे। हम सबसे पहले तकनीकी शब्दों और मसीही जीवन को देखेंगे; दूसरा, हम समुदाय की सहभागिता के संबंध में तकनीकी शब्दों की खोज करेंगे; और तीसरा हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या के संबंध में उनकी जाँच करेंगे। आइए, सर्वप्रथम हम मसीही जीवन के धर्मविज्ञानी स्रोत को देखें।

114

मसीही जीवन

आपको पिछले अध्याय से याद होगा कि मसीही जीवन व्यक्तिगत पवित्रीकरण की प्रक्रिया है। व्यक्तिगत पवित्रीकरण कम से कम तीन स्तरों पर होना चाहिए : वैचारिक, व्यावहारिक और भावनात्मक स्तर। या जैसा कि हमने बताया है, पवित्रीकरण में सही विचार (ओर्थोडोक्सी), सही आचरण (ओर्थोप्राक्सिस) और करूणाभाव (ओर्थोपाथोस) का विकास सम्मिलित है। अब मसीही जीवन के ये तीनों पहलू परस्पर निर्भर रहते हैं, और परस्पर आदान-प्रदान के असंख्य जालों की रचना करते हैं। सही सोच—या ओर्थोडोक्सी —हमारे व्यवहार (ओर्थोप्राक्सिस) और भावनाओं (ओर्थोपाथोस) को प्रभावित करती है। हमारे व्यवहार (ओर्थोप्राक्सिस) उस तरीके को प्रभावित करते हैं जिनमें हम विषयों पर विचार-विमर्श (ओर्थोडोक्सी) करते हैं, और हम उनके बारे में कैसे महसूस (ओर्थोपाथोस) करते हैं। और निस्संदेह हमारी भावनाएँ (ओर्थोपाथोस) इस बात को गहराई से प्रभावित करती हैं कि हम कैसा व्यवहार करते हैं (ओर्थोप्राक्सिस) और कैसे सोचते हैं (ओर्थोडोक्सी) हैं।

115

समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम उन सभी तरीकों की खोज करें जिनमें तकनीकी शब्द इस अंतरक्रिया में टकराते हैं। इसलिए, हम उस एक-एक मुख्य तरीके तक ही सीमित रहेंगे जिसमें वे मसीही जीवन का विकास कर सकते हैं और रूकावट बन सकते हैं। आइए पहले उस एक तरीके को देखें जिसमें विधिवत धर्मविज्ञान की विशेष शब्दावली मसीह के लिए जीने में एक सकारात्मक उन्नति बन सकती है।

116

वृद्धि

मसीही जीवन में तकनीकी शब्दों को सीखने का एक सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वे बाइबल की जटिल शिक्षाओं के सरल विवरणों के रूप में कार्य करते हैं। पहले पहल विधिवत धर्मविज्ञान में पाई जाने वाली विशेष अभिव्यक्तियों की सूची भयभीत करने वाली हो सकती है। उनकी संख्या बहुत अधिक है और उन्हें याद रखना बहुत कठिन प्रतीत होता है। परंतु कुछ समय के बाद तकनीकी शब्द वास्तव में बातों को सरल रूप से समझाने में बहुत अधिक लाभदायक होते हैं। हम तकनीकी शब्द के त्वरित उल्लेख के साथ बाइबल की जटिल शिक्षाओं को याद कर सकते हैं और तब हमारे सोच-विचार, व्यवहार और भावनाओं पर उन्हें लागू कर सकते हैं।

117

एक क्षण के लिए ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जिसके पास विधिवत धर्मविज्ञान की शब्दावली का ज्यादा ज्ञान न हो। उदाहरण के लिए, चाहे यह चकित करने वाला भी क्यों न हो, नए विश्वासियों ने अक्सर मुझसे यह पूछा है, “क्या यीशु परमेश्वर है या परमेश्वर का पुत्रॽ” यह समझना कठिन नहीं है कि लोग इसके बारे में असमंजस में क्यों पड़ जाते हैं। जब वे बाइबल को तकनीकी शब्दों की समझ के बिना पढ़ते हैं, तो उनके पास कोई ऐसी अवधारणा उपलब्ध नहीं होती जो उनकी सहायता कर सके। वे बाइबल के एक अनुच्छेद को पढ़ते हैं और वह ऐसा कहता प्रतीत होता है कि यीशु परमेश्वर है। तब वे किसी दूसरे अनुच्छेद को पढ़ते हैं और वह ऐसा कहता प्रतीत होता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है जो स्वयं को परमेश्वर के अधीन कर देता है।

118

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि विश्वासी अक्सर असमंजस में पड़ जाते हैं जब बात इस तरह के व्यावहारिक प्रश्नों की आती है : “मुझे किससे प्रार्थना करनी चाहिए, यीशु से या परमेश्वर सेॽ यदि यीशु ने हमें पिता से प्रार्थना करना सिखाया है तो फिर बहुत से मसीही यीशु से प्रार्थना क्यों करते हैं?” ऐसे ही, “यदि यीशु ने हमें पिता से प्रार्थना करना सिखाया है तो हम पवित्र आत्मा की स्तुति के गीत क्यों गाते हैंॽ”

119

उसको ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बहुत अधिक समय और प्रयास की आवश्यकता होगी जिसके पास तकनीकी धर्मविज्ञानी भाषा की कोई पृष्ठभूमि न हो। उन्हें बाइबल के असँख्य अनुच्छेदों को खोजना होगा और उनको किसी प्रभावशाली अर्थ में एकसाथ रखना होगा। यह कार्य इतना जटिल है कि बहुत से नए विश्वासी हार मान लेंगे और वैसा ही करेंगे जैसा वे दूसरों को करता हुआ देखते हैं।

120

परंतु एक क्षण के लिए उन विश्वासियों की कल्पना कीजिए जो विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी शब्दावली को जानते हैं। यदि वे सोचें, “क्या यीशु परमेश्वर है या परमेश्वर का पुत्रॽ” या यदि वे सोचें, “क्या मुझे पिता से या पुत्र से या आत्मा से प्रार्थना करनी चाहिएॽ” तो उनके प्रश्नों का उत्तर देना बहुत ही आसान होगा। सच्चाई तो यह है कि मसीही विश्वासी जो विधिवत प्रक्रियाओं में तकनीकी शब्दावली से अवगत हैं, वे सामान्यतः ऐसे प्रश्न उठाते ही नहीं क्योंकि इनका उत्तर बहुत ही सरल तकनीकी शब्द में दिया जा सकता है : और वह है त्रिएकता। यदि कोई इस शब्द के अर्थ से अवगत है तो ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर उसी समय मिल जाएंगे, और हम लगभग स्वाभाविक रूप से पारंपरिक उत्तर को व्यवहार (ओर्थोप्राक्सिस) और भावनाओं (ओर्थोपाथोस) पर लागू कर सकते हैं। जटिल विषयों को सरल बनाने और उन्हें याद करने की क्षमता एक ऐसी बड़ी उन्नति है जो तकनीकी शब्दावली हमारे मसीही जीवन को प्रदान करती है।

121

यद्यपि विधिवत धर्मविज्ञान की विशेष शब्दावली मसीही जीवन में कई तरीकों से उन्नति कर सकती है, फिर भी हमें इस बात के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए कि यह हमारे पवित्रीकरण में रुकावटें भी प्रस्तुत कर सकती है।

122

रूकावट

जैसा कि मैंने स्वयं को और दूसरों को विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी अभिव्यक्तियों के साथ बहुत अधिक परिचित होते देखा है, तो उसमें एक हानि बार-बार दिखाई देती है। विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली को जानना आत्मिक घमंड की ओर ले जा सकता है। यह विशेषकर धर्मविज्ञान के युवा विद्यार्थियों के साथ विशेष रूप से होता है।

123

समस्या अक्सर ऐसे उठ खड़ी होती है। धर्मविज्ञान के विद्यार्थी धर्मविज्ञान के तकनीकी शब्दों को सीखने के लिए बौद्धिक क्षमता को खर्च करते हैं और वे उन्हें उनके प्रयोग को बहुत सुविधाजनक पाते हैं। परंतु इसके साथ-साथ, अधिकांश साधारण लोगों के पास इस तरह के विवरणों को सीखने की क्षमता, समय और रूचि नहीं होती। और अक्सर धर्मविज्ञान के विद्यार्थी स्वयं को उनसे बेहतर समझना आरंभ कर देते हैं जिनके पास विधिवत प्रक्रियाओं की तकनीकी शब्दावली नहीं होती। वे घमंड से इतना ज्यादा भर जाते हैं कि यह मानने लग जाते हैं कि अधिक शब्दावली का अर्थ है अधिक पवित्रीकरण। परंतु ऐसा बिल्कुल नहीं होता।

124

जैसा कि हमने कहा है, मसीही जीवन में विकास, अर्थात् व्यक्तिगत पवित्रीकरण में वृद्धि, हमारे विचारों को पवित्रशास्त्र से अभिपुष्ट करने से ही नहीं आता। अपने विश्वास पर कार्य करना और अपने विश्वास में उचित अहसास भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। सच्चाई तो यह है कि अधिकांश विश्वासी विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी शब्दावली को जानने पर अनुग्रह में विकास करते जाते हैं। हम फिर भी पवित्रशास्त्र को सीख सकते हैं और ऐसे ज्ञान के बिना भी उसे अपने प्रतिदिन के जीवन में लागू कर सकते हैं।

125

जीवन के अनुभव जैसे सताव, दुःख और बीमारी अक्सर तकनीकी शब्दावली को सीखने के बौद्धिक अभ्यास की अपेक्षा एक व्यक्ति के पवित्रीकरण को कहीं अधिक बढ़ाते हैं। अतः विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट विशेष शब्दों और वाक्यों के साथ परिचित होना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अधिक हमें इसमें भी जागरूक होना चाहिए कि वे हमारे मसीही जीवन में वास्तव में रूकावट भी बन सकते हैं यदि हम उन्हें आत्मिक घमंड की ओर अगुवाई करने की अनुमति देते हैं, अर्थात् ऐसे भाव की ओर कि हम मसीह में केवल इसलिए परिपक्व हैं क्योंकि हमने विशेष शब्दावली को सीख लिया है।

126

तकनीकी शब्द कैसे मसीही जीवन में लाभ और हानि ला सकते हैं, को समझने के अतिरिक्त हमें इसके प्रति भी जागरूक होना चाहिए कि वे समुदाय में हमारी सहभागिता पर कैसे प्रभाव डालते हैं।

127

समुदाय में सहभागिता

समुदाय में परस्पर सहभागिता मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण का एक मुख्य स्रोत है, क्योंकि यह हमारी उस सहायता पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है जो मसीह की देह हमें प्रदान करती है। हम मसीही समुदाय में परस्पर सहभागिता के लिए तीन महत्वपूर्ण आयामों की बात कर सकते हैं : मसीही धरोहर, वर्तमान मसीही समुदाय और व्यक्तिगत निर्णय। मसीही धरोहर अतीत की कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य की साक्षी को प्रस्तुत करती है। हम वह सीखते हैं जो उसने हमारे आत्मिक पूर्वजों को सिखाया था। हमारा वर्तमान मसीही समुदाय आज के मसीहियों के जीवन की साक्षी प्रस्तुत करता है, अर्थात् वह जो पवित्र आत्मा हमारे चारों ओर के अन्य विश्वासियों को सीखा रहा है। हमारे व्यक्तिगत निर्णय ऐसे विषयों पर हमारे व्यक्तिगत निष्कर्षों या बोधों को प्रस्तुत करता है, जिन्हें हम पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत अगुवाई में दूसरों के साथ हमारी सहभागिता के दौरान सामने लाते हैं। समुदाय के ये आयाम एक दूसरे के साथ भिन्न-भिन्न तरीकों से व्यवहार करते हैं, साथ ही परस्पर आदान-प्रदान के असँख्य जालों का निर्माण करते हैं। हमारी धरोहर हमारे वर्तमान समुदाय और व्यक्तिगत निर्णयों को जानकारी प्रदान करती है। हमारा वर्तमान समुदाय हमारी धरोहर के साथ मध्यस्थता करता है और हमारे व्यक्तिगत निर्णयों को प्रभावित करता है। और हमारे व्यक्तिगत निर्णय हमारी धरोहर के प्रभावों और वर्तमान समुदायों की भी मध्यस्थता करते हैं।

128

परस्पर सहभागिता के इन मूलभूत तत्वों को ध्यान में रखते हुए हमें कुछ ऐसे तरीकों की खोज करनी चाहिए जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान की विशेष शब्दावली समुदाय की परस्पर सहभागिता में वृद्धि या रूकावट का कारण बन सकती है। आइए सबसे पहले हम उस एक महत्वपूर्ण तरीके को देखें जिसमें तकनीकी शब्द समुदाय में परस्पर सहभागिता में वृद्धि कर सकते हैं।

129

वृद्धि

एक महानतम तरीका जिसमें तकनीकी शब्द सामुदायिक वार्तालाप में वृद्धि कर सकते हैं उसे एक शब्द में सारगर्भित किया जा सकता है : सम्प्रेषण या वार्तालाप। जब विश्वासी उन विशेष अभिव्यक्तियों को जान लेते हैं और उनका प्रयोग कर पाते हैं, जिन्हें विधिवत धर्मविज्ञानियों ने विकसित किया है, तो वे एक दूसरे से अधिक प्रभावशाली रूप में वार्तालाप कर सकते हैं।

130

एक ओर, जब हम विधिवत प्रक्रियाओं की भाषा को जान लेते हैं तो हम अपनी मसीही धरोहर के साथ बहुत प्रभावशाली रूप में परस्पर सहभागिता कर सकते हैं। अधिकाँश धर्मविज्ञानी कार्य, टीका, विश्वासवचन, अंगीकार, और अतीत के अन्य धर्मविज्ञानी लेख मसीही धारणाओं को सारगर्भित करने के रूप में तकनीकी शब्दों का अक्सर प्रयोग करते हैं। और विशेष रूप से, विधिवत धर्मविज्ञान बातों को व्यक्त करने के इन पारंपरिक तरीकों से गहराई से संबंधित है। अतः विधिवत प्रक्रियाओं के तकनीकी शब्द हमारी बहुत सहायता करते हैं जब हम अतीत के मसीही विश्वासियों से सहभागिता करते है।

131

उदाहरण के लिए, यदि आप यह जानने में रूचि रखते हैं कि ऑगस्टीन, अक्विनॉस, लूथर या कॉल्विन जैसे कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने क्या शिक्षा दी, तो आप बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं, यदि आप पारंपरिक तकनीकी शब्द से परिचित हैं। यह बात निश्चित है कि बहुत से शब्द इन लोगों के दिनों के बाद बनाए गए हैं, परंतु तब भी तकनीकी शब्द हमें उनके लेखन कार्यों के साथ संबंध स्थापित करने के तरीके बताते हैं ताकि हम उससे लाभ प्राप्त कर सकें जो परमेश्वर ने उन्हें सिखाया था।

132

दूसरी ओर, हमारे वर्तमान समुदायों के साथ परस्पर सहभागिता भी काफी बढ़ सकती है यदि हम और वे जो हमारे चारों ओर हैं एक जैसी धर्मविज्ञानी शब्दावली को रखें।

133

अगली बार जब आप किसी कक्षा या कलीसियाई सम्मलेन में हों तो सावधानी से उन तरीकों को सुनें जिनमें आपके सह-विश्वासी एक दूसरे के साथ धर्मविज्ञान के बारे में बातचीत करते हैं। यह जल्द ही स्पष्ट हो जाएगा कि अच्छा वार्तालाप तब होता है जब सहभागी उन शब्दों के अर्थों पर सहमत होते हैं जिनका वे प्रयोग कर रहे होते हैं। जब वे सहमत नहीं होते, तो उनका वार्तालाप टूट जाता है।

134

क्या यह अच्छा नहीं है कि अधिकांश प्रोटेस्टेंटवादी शब्द “पवित्रीकरण” का प्रयोग “केवल विश्वास के द्वारा पवित्रीकरण” के लिए ही करते हैंॽ क्या आप वार्तालाप में समस्याओं की कल्पना कर सकते हैं, यदि हमें शब्द पवित्रीकरण का प्रयोग भिन्न-भिन्न तरीकों में करना पड़े? क्या यह अच्छा नहीं है कि जब हम “पवित्रीकरण” के बारे में बोलते हैं तो यह जान सकते हैं कि हम क्या बात कर रहे हैंॽ क्या यह सकारात्मक नहीं है कि हम “मसीह की दीनता” और “मसीह के ऊँचे पर उठाए जाने” के बारे में बिना यह पूछे बात कर सकते हैं कि हमारे कहने का अर्थ क्या हैॽ जितना अधिक हम तकनीकी शब्दों को जानते और साझा करते हैं, उतना अधिक हम एक दूसरे के साथ प्रभावशाली तरीके से वार्तालाप कर सकते हैं।

135

यद्यपि यह सत्य है कि विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली इन और अन्य तरीकों में हमारी परस्पर सहभागिता में उन्नति कर सकती है, फिर भी ऐसा भी हो सकता है कि यह समुदाय में परस्पर सहभागिता में रुकावट भी बने।

136

रूकावट

विधिवत धर्मविज्ञान में कई विशेष अभिव्यक्तियाँ पुरानी हो गई हैं और वर्तमान में अच्छे वार्तालाप में सहायक नहीं है। इनमें से कुछ तो धर्माध्यक्षीय और मध्यकालीन समयों की हैं। अन्य कई अभिव्यक्तियां कई सदियों पुरानी हैं। यद्यपि इन तकनीकी शब्दों की रचना उस समय वार्तालाप में सहायता करने के लिए की गई थी, परंतु अब वे इतनी पुरानी हो गई हैं कि आज वार्तालाप में सहायता नहीं कर सकतीं। फलस्वरूप, हम इन पुराने शब्दों को सीख सकते हैं, परंतु हममें से बहुत से इन्हें नहीं सीखेंगे, और इससे समुदाय की परस्पर सहभागिता बहुत सीमित हो जाएगी।

137

जब मैं द्वि-तत्ववादी एकता की धर्मशिक्षा, अर्थात् मसीह के एकल व्यक्तित्व में मसीह के ईश्वरीय और मानवीय स्वभावों की एकता को स्पष्ट करता हूँ तो मैंने इस समस्या का सामना अक्सर किया है। कितने लोग इस शब्द “द्वि-तत्ववाद” के अर्थ को जानते होंगेॽ हम ये सोच सकते हैं कि हम शब्द “स्वभाव” और “व्यक्तित्व” के अर्थ को जानते हैं, परंतु इन शब्दों का हमारा आज का अर्थ प्राचीन मसीहियों के अर्थ से बहुत अलग है।

138

अतः जब हम विधिवत धर्मविज्ञान की तकनीकी शब्दावली से परिचित होते हैं तो हमें यह पहचानने में सावधान रहना चाहिए कि यह समुदाय के भीतर वार्तालाप में रूकावट भी बन सकती है।

139

तकनीकी शब्दों के मसीही जीवन और समुदाय में सहभागिता के साथ संबंध रखने के कुछ तरीकों को देख लेने के बाद अब हमें अपने तीसरे मुख्य धर्मविज्ञानी स्रोत की ओर मुड़ना चाहिए : पवित्रशास्त्र की व्याख्या। विधिवत प्रक्रियाओं के विशेष शब्द और वाक्यांश किस प्रकार बाइबल की हमारी व्याख्या को प्रभावित करते हैंॽ

140

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

संपूर्ण मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए व्याख्या अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पवित्रशास्त्र में दिए हुए परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की ओर हमारी सबसे अधिक प्रत्यक्ष पहुँच हैं। एक अन्य अध्याय में हमने सुझाव दिया है कि उन तीन तरीकों के विषय में सोचना सहायक होगा जिनमें पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में कलीसिया की अगुवाई की है। हमने इन व्यापक श्रेणियों को साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और विषयात्मक विश्लेषण कहा है। पहला, साहित्यिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक चित्र या कलात्मक प्रस्तुति के रूप में देखता है, जिसकी रचना विशिष्ट साहित्यिक विशेषताओं के माध्यम से उनके मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए मानवीय लेखकों द्वारा दैवीय प्रेरणा के द्वारा की गई है। दूसरा, ऐतिहासिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को इतिहास की ओर एक खिड़की के रूप में देखता है, जो ऐसी प्राचीन एतिहासिक घटनाओं को देखने और सीखने का तरीका है जिन्हें पवित्रशास्त्र त्रुटिरहित रूप से दर्शाता है। और तीसरा, विषयात्मक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक दर्पण की तरह देखता है, जो हमारी रूचि के प्रश्नों और विषयों पर मनन करने का एक तरीका है। हर बार जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो हम इन तीनों तरह के विश्लेषणों का किसी न किसी तरह प्रयोग करते हैं, क्योंकि ये एक दूसरे पर परस्पर बहुत निर्भर होते हैं। वे भी परस्पर आदान-प्रदान के जालों का निर्माण करते हैं। फिर भी, किसी एक समय में हम अपनी आवश्यकताओं और उद्देश्यों पर आधारित होकर किसी एक तरीके को दूसरे से अधिक महत्व दे सकते हैं।

141

विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के विषयात्मक दृष्टिकोणों को किसी अन्य व्याख्यात्मक विधि से अधिक प्रयोग करता है। विधिवत धर्मविज्ञानी यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि बाइबल उन विषयों के बारे में क्या शिक्षा देती है जिनमें उनकी विशेष रूचि होती है। दूसरे शब्दों में, विधिवत धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र को विशेष धर्मशिक्षाओं से संबंधित प्रश्नों के साथ देखते हैं।

142

वे ऐसे प्रश्नों को पूछते हैं जैसे, “बाइबल परमेश्वर के बारे में क्या कहती हैॽ” “मनुष्य के बारे में यह क्या कहती हैॽ” “उद्धार के बारे में यह क्या कहती हैॽ” वे अपने प्रश्नों के बाइबल आधारित उत्तरों को प्राप्त करने के लिए पवित्रशास्त्र को खोजते हैं और इस अनुच्छेद या उस अनुच्छेद से जानकारी को एकत्र करते हैं। इस प्रक्रिया में जिस एक बड़ी चुनौती का सामना विधिवत धर्मविज्ञानी करते हैं वह यह है कि यह कैसे निर्धारित किया जाए कि पवित्रशास्त्र का कौन सा अनुच्छेद उनके प्रश्नों पर टिप्पणी करता है। “क्या यह अनुच्छेद इस धर्मशिक्षा को संबोधित करता हैॽ” “क्या यह अनुच्छेद इस या उस विषय पर बोलता हैॽ” कई बार इस या उस अनुच्छेद का चुनाव करना स्पष्ट होता है, परंतु बहुत बार यह उतना स्पष्ट नहीं होता है। और विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दावली इस पूरी प्रक्रिया में एक जटिल कार्य है।

143

यह समझने के लिए कि यह ऐसा कैसे है, हमें याद रखना आवश्यक है कि पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले शब्दों और अवधारणाओं के बीच संबंध बहुत जटिल हैं। अन्य बातों के साथ-साथ बाइबल के बहुत से शब्द एक ही अवधारणा को दर्शा सकते हैं। और एक शब्द कई अवधारणाओं को दर्शा सकता है। पवित्रशास्त्र में ये अनेक संबंध एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न-भिन्न होते हैं और कई बार ये काफी भ्रमित करने वाले होते हैं। परंतु विधिवत धर्मविज्ञानियों ने ऐसी अस्पष्टताओं को दूर करने के लिए तकनीकी शब्दावली को विकसित किया है। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की है जो कि विशेष रूप से परिभाषित किए गए हैं जिनका उद्देश्य केवल एक ही धर्मविज्ञानी अवधारणा को व्यक्त करने का होता है। इस भाव में, विधिवत धर्मविज्ञान में शब्दों और अवधारणाओं के बीच व्यक्तिगत संबंध होता है।

144

अब बाइबल में विधिवत धर्मविज्ञान में शब्दों और अवधारणाओं के बीच की यह भिन्नता एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवलोकन की ओर अगुवाई करती है। शब्दावली के स्तर पर विधिवत धर्मविज्ञानी शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं। वे अपनी धर्मविज्ञानी अभिव्यक्तियों को बाइबल की अभिव्यक्तियों के अनुरूप बनाने का प्रयास नहीं करते। इसकी अपेक्षा, विधिवत वैज्ञानिक बाइबल आधारित शब्दों का प्रयोग अपने ही रूपों मे करते हैं। वे बाइबल से बाहर के शब्दों का प्रयोग करते हैं और यहाँ तक कि बाइबल-आधारित और बाइबल से बाहर के शब्दों को जोड़ भी देते हैं।

145

इसके साथ-साथ, अवधारणाओं के स्तर पर, मजबूत विधिवत धर्मविज्ञानी सदैव पवित्रशास्त्र से वैचारिक अनुरूपता को खोजने का प्रयास करते हैं। वे ऐसे विचारों को समझने और उन्हें अपनी शब्दावली में स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं जिनकी शिक्षा बाइबल देती है। यद्यपि वे अपनी शब्दावली में स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं, फिर भी विधिवत धर्मविज्ञानियों का लक्ष्य वैचारिक अनुरूपता होता है।

146

यह मूलभूत भिन्नता हमारी यह देखने में सहायता करती है कि विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्द पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या में वृद्धि भी कर सकते हैं और रूकावट उत्पन्न भी कर सकते हैं। सारांश में, जब शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता और वैचारिक अनुरूपता के बीच की भिन्नताओं को ध्यान में रखा जाता है, तो विशेष विषयों के लिए सही अनुच्छेदों को चुनने की हमारी क्षमता में काफी वृद्धि हो सकती है। परंतु जब इसे भूला दिया जाता है तो सही चुनाव करने की हमारी क्षमता में काफी रूकावट उत्पन्न हो सकती है। आइए सबसे पहले हम उस तरीके के बारे में सोचें जिसमें विधिवत धर्मविज्ञान में शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता और वैचारिक अनुरूपता को समझना व्याख्या करने में हमारी सहायता कर सकता है।

147

वृद्धि

दुर्भाग्य से, पवित्रशास्त्र के कई व्याख्याकार अक्सर एक ऐसे रूप में कार्य करते हैं जिसका वर्णन बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक रूप में किया जा सकता है। वे गलत रूप में अनुमान लगाते हैं कि पवित्रशास्त्र का कोई अनुच्छेद एक ऐसे धर्मविज्ञानी अवधारणा के बारे में तभी बोलता है यदि वह अनुच्छेद उस तकनीकी शब्द का प्रयोग करता है जिनकी पहचान वे उस विषय के साथ करते हैं। यदि उनका विशेष धर्मविज्ञानी शब्द, अक्सर विधिवत धर्मविज्ञान की कोई तकनीकी अभिव्यक्ति, उस अनुच्छेद में प्रकट नहीं होता तो वे गलत तरीके से उस अनुच्छेद को अपने विचार-विमर्श से बाहर कर देते हैं।

148

वास्तविकता में, विधिवत धर्मविज्ञानियों को, जब वे पवित्रशास्त्र की खोज करते हैं, तो बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक नहीं बल्कि उचित रूप से चयनात्मक होना चाहिए। वे ऐसा कर सकते हैं जब वे यह याद रखते हैं कि बाइबल के लेखक सब प्रकार के शब्दों के साथ विषयों को व्यक्त करते हैं। बाइबल के लेखक अक्सर किसी विषय या अवधारणा पर टिप्पणी करते हैं, तब भी जब उनकी अभिव्यक्तियाँ विधिवत धर्मविज्ञान के तकनीकी शब्दों से मेल नहीं खाते। इस कारण जब विधिवत धर्मविज्ञानी किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ते हैं तो उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे कुछ शब्दों को ढूँढते हुए कहीं बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक न हो जाएं। इसकी अपेक्षा उन्हें ऐसे अनुच्छेदों की खोज करनी चाहिए जिनमें प्रासंगिक अवधारणाएँ हों।

149

उदाहरण के लिए, इस अध्याय में हमने देखा है कि पवित्रशास्त्र बहुत से शब्दों का प्रयोग नवजीवन की अवधारणा या धर्मशिक्षा का वर्णन करने के लिए करता है। एक व्यक्ति का आत्मिक मृत्यु से मसीह में जीवन के आरंभिक परिवर्तन को केवल तीतुस 3:5 में “नया जीवन” कहा गया है। परंतु यदि विधिवत धर्मविज्ञानी स्वयं को केवल इस एक ही अनुच्छेद तक प्रतिबंधित करें क्योंकि उनके तकनीकी शब्द का प्रयोग कहीं और नहीं हुआ, तो वे पवित्रशास्त्र की व्याख्या से इस विषय के बारे में कुछ ज्यादा नहीं सीख पाएँगे। एक व्यक्ति की मृत्यु से मसीह में जीवन के आरंभिक परिवर्तन के विषय पर बाइबल की शिक्षा शब्द नवजीवन तक ही सीमित नहीं है। पवित्रशास्त्र “नए मनुष्य,” “नए सिरे से जन्म,” “नया जन्म” और ऐसी कई अन्य अभिव्यक्तियों के प्रयोग के द्वारा इसी धर्मविज्ञानी धर्मशिक्षा के बारे में बात करता है। “नए मनुष्य” की अभिव्यक्ति वाले अनुच्छेदों को एक अलग धर्मशिक्षा के रूप में सूचीबद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। और “नए सिरे से जन्म” या “नए जन्म” की अभिव्यक्तियों के पदों को भी एक अलग धर्मशिक्षा के रूप में सूचीबद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। वे सब एक समान धर्मविज्ञानी विषय के लिए बोलते हैं। वास्तव में कई ऐसे अनुच्छेद हैं जो इस विषय या अवधारणा के बारे में बिना किसी विशेष शब्द या वाक्यांश का प्रयोग किए बिना भी बात करते हैं। जब विधिवत धर्मविज्ञानी यह याद रखते हैं कि वे शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और केवल पवित्रशास्त्र के साथ वैचारिक अनुरूपता को खोजते हैं तो वे सब प्रकार के अनुच्छेदों से नवजीवन के बारे में सीख सकते हैं। वे और भी अधिक व्यापक हो सकते हैं जब वे उसकी खोज करते हैं जिसे पवित्रशास्त्र आरंभिक परिवर्तन की अवधारणा के बारे में सिखाता है, फिर चाहे बाइबल में इसे कैसे भी व्यक्त किया गया हो।

150

रूकावट

जहाँ यह सच है कि शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता और विधिवत धर्मविज्ञान की वैचारिक अनुरूपता को ध्यान में रखने से हमारी व्याख्या में उन्नति हो सकती है, वहीं इस सच्चाई को भूल जाना पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या में रुकावट भी उत्पन्न कर सकता है। कई ऐसे तरीके हैं जिनमें यह सच है, परंतु एक सबसे आम तरीका जिसमें तकनीकी शब्द व्याख्या में रुकावट बन सकते हैं, वह यह है जिसे “अति-सामान्यीकरण” कहा जा सकता है।

151

“अति-सामान्यीकरण” विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के द्वारा व्याख्या के सामने लाई गई सबसे प्रचलित समस्या है। यह अक्सर दो तरीकों से प्रकट होती है : जब विद्यार्थी विधिवत प्रक्रियाओं में विशेष शब्दों को सीखते हैं और उन्हें काफी सहायक पाते हैं, तो वे अक्सर अपनी तकनीकी परिभाषाओं को पवित्रशास्त्र में हर स्थान पर पाई जाने वाली अभिव्यक्तियों को देखना आरंभ कर देते हैं। वे गलत रूप से अनुमान लगाते हैं कि प्रत्येक अनुच्छेद जहाँ एक शब्द प्रकट होता है, वह एकसमान धर्मविज्ञानी विषय या धर्मशिक्षा को संबोधित करता है।

152

परंतु जब हम याद रखते हैं कि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और वैचारिक अनुरूपता की खोज करते हैं तो हम “अति-सामान्यीकरण” से बच सकते हैं और उपयुक्त चुनाव कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हम पवित्रशास्त्र के उन भागों का चुनाव करने के लिए बेहतर रूप से तैयार होंगे जो वास्तव में हमारे मन के विषय या धर्मशिक्षा को संबोधित करते हैं।

153

उदाहरण के लिए उसे देखें जिसे हमने इस अध्याय में “धर्मी ठहराए जाने” के विषय में कहा है। पारंपरिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान में शब्द “धर्मी ठहराया जाना” धार्मिकता की आरंभिक घोषणा की अवधारणा को दर्शाता है, जो कार्यों के द्वारा नहीं बल्कि विश्वास के माध्यम से तब मिलती है, जब एक व्यक्ति में उसके विश्वास के कारण मसीह की धार्मिकता रोपित की जाती है। अब धर्मी ठहराए जाने की यह तकनीकी परिभाषा विधिवत धर्मविज्ञान में इतनी महत्वपूर्ण है कि यह यह अपेक्षा करना सरल है कि प्रत्येक शब्द “धर्मी ठहराए जाने,” या डिकायो को अपने में रखने वाला प्रत्येक पद इसी धर्मशिक्षा को दर्शाता है। अतः व्याख्याकार या तो धर्मी ठहराए जाने के अपने तकनीकी अर्थ को ऐसे अनुच्छेदों पर थोप देते हैं जहाँ उसका यह अर्थ नहीं होता, या फिर वे धर्मी ठहराए जाने की पारंपरिक धर्मशिक्षा को ऐसे बदल देते हैं कि गलत रूप से चुने हुए अनुच्छेदों को समायोजित कर सकें। हमने देखा है कि याकूब 2:24 शब्द “धर्मी ठहराए जाने” या डिकायो का प्रयोग एक ऐसे रूप में करता है जो कि पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान से अलग है। दुर्भाग्यवश, कुछ धर्मविज्ञानियों ने यह सोचा है कि क्योंकि शब्द “धर्मी ठहराया जाना” इस अनुच्छेद में ही प्रकट होता है इसलिए यह विधिवत धर्मविज्ञान में धर्मी ठहराए जाने की धर्मशिक्षा को संबोधित करता है। और परिणामस्वरूप, वे धर्मी ठहराए जाने की धर्मशिक्षा को पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले इस शब्द के कई प्रयोगों से भ्रमित कर देते हैं।

154

परंतु हमें याकूब को केवल मौखिक स्तर की अपेक्षा वैचारिक स्तर पर समझना चाहिए। क्योंकि शब्द “धर्मी ठहराया जाना” इस या किसी और अनुच्छेद में प्रकट होता है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि इसे धर्मी ठहराए जाने की विधिवत धर्मविज्ञानी धर्मशिक्षा को प्रभावित करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

155

क्योंकि विधिवत धर्मविज्ञानी शब्दावली-संबंधी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और पवित्रशास्त्र के प्रति केवल वैचारिक अनुरूपता को खोजते हैं, इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हम पवित्रशास्त्र में शब्दों के विविध प्रयोग को कभी शिथिल न करें। इसे शिथिल करना हमारी व्याख्या को बहुत अधिक बाधित कर देगा।

156

अतः विधिवत धर्मविज्ञान में ये तकनीकी शब्द ही हैं जो सभी तीनों धर्मविज्ञानी स्रोतों के हमारे प्रयोग में वृद्धि या रूकावट उत्पन्न कर सकते हैं। तकनीकी शब्द मसीही जीवन, समुदाय में परस्पर सहभागिता और पवित्रशास्त्र की व्याख्या के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, परंतु इसके साथ-साथ जब हम इन मुख्य धर्मविज्ञानी स्रोतों का प्रयोग करते हैं तो वे ऐसे खतरे भी प्रस्तुत करते हैं जिनसे बचा जाना चाहिए।

157

उपसंहार

इस अध्याय में हमने विधिवत धर्मविज्ञान के तकनीकी शब्दों के कई आयामों की खोज की है। हमने इस ओर एक दिशा-निर्धारण को प्राप्त किया कि वे क्या हैं और वे कैसे विधिवत धर्मविज्ञान की पूरी प्रक्रिया के भीतर उपयुक्त बैठते हैं। हमने विधिवत धर्मविज्ञानियों को देखा है कि वे कैसे अपने विशेष या तकनीकी शब्दों का निर्माण करते हैं। और हमने ऐसे कुछ मूल्यों और खतरों को भी देखा है जिन्हें तकनीकी शब्द प्रस्तुत करते हैं।

158

जब हम विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करने की इस श्रृंखला को निरंतर जारी रखते हैं, तो हम उसकी प्रासंगिकता को देखेंगे जो हमने बहुत बार तकनीकी शब्दों के बारे में सीखा है। विधिवत प्रक्रियाओं की विशेष शब्दावली को सीखना और यह सीखना कि उनका बुद्धिमानी से कैसे प्रयोग करना है, एक धर्मविज्ञानी द्वारा किया जा सकने वाला सबसे सहायक कार्य हो सकता है। इन विषयों पर एक मजबूत पकड़ रखने के द्वारा हम एक ऐसे विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण कर सकते हैं जो परमेश्वर को आदर देगा और कलीसिया को बढ़ाएगा।

159